सम्पादकीय
नारी सशक्तीकरण वर्ष प्राणवान हो, उपलब्धियों से परिपूर्ण हो 《2

उत्तराखण्ड उत्कर्ष कार्ययोजना एवं स्वर्ण रेखा नदी स्वच्छता अभियान 3》

देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ शृंखला 4》

अयोध्या में पाँच मंजिला भव्य शक्तिपीठ के लिए शिलान्यास 6》

युवा चेतना जागरण एवं नारी सशक्तीकरण शिविर शृंखलाएँ 7》

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जून 2022

वर्ष : 34, अंक : 24
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 जून 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

चरित्र बल-राष्ट्रीय प्रगति का मूल आधार

चारित्रिक विकास के बिना कोई भी भौतिक सफलता स्थिर नहीं रह सकती। - युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

भौतिक संसाधन ही पर्याप्त नहीं

चरित्र-बल मानवीय शक्ति का मूलाधार है। पारस्परिक सहयोग द्वारा उद्योगों को आगे बढ़ाना और अर्थव्यवस्था को सुधारना सामाजिल विकास के लिए आवश्यक है। आवश्यकता इस बात की है कि औद्योगिक विकास से खूब अच्छी-अच्छी वस्तुओं के उत्पादन की व्यवस्था होने लगे, कृषि में विकास हो, उपज बढ़े, स्वास्थ्य और आरोग्य के साधन बढ़ें, लोग वैज्ञानिक शोधों में हिस्सा लें। लेकिन समाज का वास्तविक उत्थान तभी हो सकता है जब जन-जन में कर्त्तव्य परायणता, धार्मिक सहिष्णुता, सच्चाई और सच्चरित्रता की भावनाओं का भरपूर समावेश हो जाए। भौतिक समृद्धि के साथ नैतिकता का अवगाहन न किया गया तो वह स्थिति हमारे लिये विनाश का कारण बन सकती है।

लोग कहते हैं-बड़ा दुर्भाग्य है, रोटी नहीं मिलती, कपड़ा नहीं मिलता, जरूरतें पूरी नहीं होती, बड़ी असमानता है, यह नहीं होता, वह नहीं होता। कुछ हद तक संभव है ऐसा भी हो, किन्तु बड़ी कमी यह है कि लोग अपना दोष स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते। बड़ा संकट यह है कि जरूरतें आवश्यकता से अधिक बढ़ गई हैं। अनैतिकता पर कोई नियन्त्रण नहीं है। मन स्वतन्त्र है, इन्द्रियाँ स्वतन्त्र हैं। कामनाओं के दल-बल स्वच्छन्द विचरण कर रहे हैं। संयम मूलक प्रवृत्तियों के नष्ट हो जाने के कारण ही यह अभाव घिरे हैं अन्यथा न तो उत्पादन कम हुआ है न जरूरत की चीजें कम पड़ी हैं। सब कुछ पहले से अधिक है पर क्या करें, लोगों की भूख इतनी बढ़ गई है, वासनायें इतनी घिर गई हैं कि बढ़े हुए साधनों से भी काम्य प्रयोजन पूरे नहीं हो पा रहे।

संयम और परमार्थ

भारतीय संस्कृति की यही विशेषता रही है कि लोग स्वयं पर संयम करना सीखें। बढ़ी हुई शक्तियों को पचा ले जाना यह संयम से ही संभव है। केवल साधनों की तृष्णा बढ़ती रहे और गुणों का विकास न हो तो उन्नति का मूल उद्देश्य नष्ट होकर दुर्भावनाओं का विकास होने लगेगा। साधन होंगे पर लोग सुखी न होंगे।

गीताकार ने अपना यह कठोर निर्णय दिया है कि सुखाकांक्षी का जीवन शुद्ध और उसका प्रत्येक कर्म यज्ञीय भावना के साथ होना चाहिए। जीवन में स्वार्थ के साथ परमार्थ का भी पर्याप्त मात्रा में समावेश होना आवश्यक है।

परमार्थ ऋण चुकाने की भावना को कहते हैं। मनुष्य जन्म से ही समाज के अगणित ऋणों का देनदार है। मनुष्य के हित की दृष्टि से उसके सामाजिक जीवन में परमार्थ का आयोजन बना रहे तो उसमें सबका कल्याण रहता है। यह अपेक्षाकृत अधिक सरल मार्ग है, जिसमें मनुष्य स्वल्प साधनों में भी विपुल सुख प्राप्त कर लेता है। सामाजिक जिम्मेदारी पूरी न करने का नाम है-कामचोरी। कर्त्तव्य से परामुख होना निठल्लापन और बेईमानी है। राष्ट्र की समृद्धि में भरपूर श्रम और पुरुषार्थ में परमार्थ की भावना प्रमुख रूप से बनी रहनी चाहिए।

जैसा औरों से चाहो, वह स्वयं करो

इस देश में आत्मदर्शी ऋषियों की परम्परायें चलती आई हैं। परिग्रह और भोग से दूर रहकर उन्होंने जो सत्य पाया, समाधान पाया, सुख और शान्ति का अनुभव पाया, उसी को यहाँ के जन-जीवन में उतारा है। उसका सम्पूर्ण सार है-चरित्र बल। चरित्र में ही सुखी जीवन के सारे रहस्य छिपे हुये हैं। चरित्र ही मनुष्य की श्रेष्ठता का उत्तम मापदंड है।

एक ओर मनुष्य के साथ स्वार्थ भावना है तो दूसरी ओर उसका जिन-जिन के साथ सम्बन्ध आता है, उनके प्रति कर्त्तव्य भी है। कर्त्तव्य बुद्धि द्वारा स्वार्थ का नियन्त्रण होना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि दूसरा कोई उसके साथ छल-कपट का व्यवहार न करे, झूठ न बोले, धोखा न दे, सताये नहीं, दबाने की चेष्टा न करे। ऐसी अवस्था में उसका भी यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह भी मन, वचन और क्रिया द्वारा सच्चाई का ही प्रदर्शन करे। जब हमारे अन्तःकरण की वृत्तियाँ सत्यमय हो जाती हैं, व्यवहार शुद्ध हो जाता है तो उसमें औरों का भला तो होता ही है, खुद अपना बहुत भला होता है। ईमानदारी और सच्चाई में सबका फायदा है, व्यावहारिक जीवन में यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए। जो नीतियाँ उन्नत समाज के लिये कही जाती हैं वे चरित्रता के अन्तर्गत ही आ जाती हैं। नेकी, ईमानदारी, व्यवहार-बुद्धि, सत्य, सहयोग और सहानुभूति यह सब उसके अंग हैं।

परतंत्रता से हम भटक गए

भारतीय जीवन में जब तक यह श्रेष्ठता विद्यमान रही, तब तक यह देश प्रत्येक क्षेत्र में संसार-भर का मुखिया बना रहा, किन्तु पिछले दिनों यहाँ कई संस्कृतियों ने प्रभाव डाला, कई तरह के शासक वर्ग आये और उन्होंने यहाँ की जीवन गति को ही अशुद्ध बना डाला। जो सिद्धान्त मानवता के विपरीत पड़ते हैं, पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से वह अधिक तेजी से विकसित हुये। धन-दौलत को अधिक महत्त्व दिया गया। जिससे अर्थ यहाँ के आकर्षण का मूल बिन्दु बन गया। इस गलत दृष्टिकोण के कारण अनेक समाज-विरोधी कुप्रवृत्तियाँ पनप उठीं।

भ्रष्टाचार की इन दिनों व्यापक चर्चा हो रही है। सरकारी मशीनरी उसे रोकने के लिए लगी भी हुई है, किन्तु उसके सुधार की कोई संभावना नजर नहीं आती। प्रश्न यह बन गया है कि जो रक्षक हैं या जिसके हाथ में उत्तरदायित्व है, वही भ्रष्ट हो गये हैं। ऐसी दशा में नैतिक जीवन का कोई मूल्य नहीं रह गया है। इसलिए विकास के अनेक साधन जुटाने पर भी मूल समस्या ज्यों की त्यों उलझी हुई है।

समाज के संतुलन और उसकी सुव्यवस्था का आधार व्यक्ति-निर्माण है। व्यक्ति-व्यक्ति से ही समाज बनता है। जिस समाज के लोग परिश्रमी, ईमानदार, सत्यनिष्ठ एवं आदर्शप्रिय होंगे वह अपने आप उत्तरोत्तर उन्नत होता चला जाएगा और राष्ट्र के विकास का वातावरण निखरता हुआ चला जाएगा।

पिछली सदियों में जो हमें सिखाया गया है वह हितकर नहीं है। पारस्परिक मतभेद, ईर्ष्या-द्वेष, फूट-कलह का तन्तु-जाल हमारा अपना बनाया नहीं है। परिस्थितियों के विक्षेप और विदेशी सत्ता के कारण ऐसा करने को हम मजबूर हुये हैं। आज बात-बात पर भाषावाद, जाति-भेद, पदलोलुपता, प्रान्तवाद के नाम पर लोग लड़ने-झगड़ने लगते हैं। क्या इससे संगठन शक्ति अक्षुण्ण रह सकती है? क्या इससे विकास की कोई समस्या हल हो सकती है?

चरित्रवान और आत्मजयी बनो

राष्ट्र का जीवन व्यक्तियों के जीवन से विनिर्मित होता है। राष्ट्र की गरिमा में व्यक्तियों का आत्मबल, मनोबल और शरीरबल गिना जाता है, पर यह तभी संभव है, जब राष्ट्र के नागरिक चरित्रवान और आत्मजयी हों। राष्ट्र को धन या रुपया, पैसा ऊँचा नहीं उठाता, वहाँ के नागरिकों की चरित्रनिष्ठा में वह शक्ति होती है, जो उसके गौरव को ऊँचा उठाती है, शिरोमणि बनाती है।

राष्ट्र विकास की इस चर्चा में आर्थिक समुन्नति का ध्यान रहे यह ठीक है। हमें गरीबी को मिटाना ही चाहिए, पर यह नहीं भूलना चाहिए कि चारित्रिक विकास के बिना कोई भी भौतिक सफलता स्थिर नहीं रह सकती है। बढ़ी हुई शक्ति का सन्तुलन उदार हृदय, चौड़े मस्तिष्क और आत्म-निष्ठा के साथ हो, तो ही उनका लाभ प्राप्त किया जा सकता है अन्यथा भौतिक उन्नति का कुछ लाभ न निकलेगा। उससे हमारी परेशानियाँ ही बढ़ेंगी। राष्ट्र का गौरव बढ़ाने के लिए अन्य साधनों के साथ चरित्र-बल बढ़ाना आवश्यक है। चरित्र सम्पूर्ण विकास की जड़ है, उसका अभिसिंचन होना ही चाहिए।

वाङ्मय खण्ड 64 (राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने), पृष्ठ 5.17-18 से संकलित-सम्पादित

खुशियाँ मनाएँ, पर मिल-जुल कर

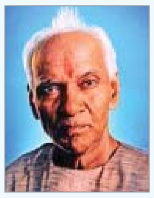

"हम जियें। खूब हँसी-खुशी और आनन्दपूर्वक जियें, यह ठीक है और हमें इसका अधिकार भी है। तथापि हमें अपनी हँसी-खुशी में दूसरों को भी भाग देना चाहिए। हमें अपने व्यक्तिगत आमोद-प्रमोद में इस सीमा तक नहीं डूबा रहना चाहिए कि आस-पास का क्रन्दन ही सुनाई न दे।

आनन्द जीवन की सहज प्रवृत्ति है। यह सुर-दुर्लभ मानव शरीर मिला ही अनन्त आनन्द को पाने और मनाने के लिए है। फिर भी भारतीय संस्कृति में एकाकी आनन्द मनाने का निषेध है। दूसरों के साथ मिलकर ही आनन्द का उपभोग वास्तविक उपभोग है अन्यथा वह अन्याय है, अनुचित है और चोरी जैसी बात है। इसीलिए भारतीय संस्कृति और धर्म में सामूहिक मेले, त्यौहार, पर्व और पारिवारिक उत्सव मिल-जुलकर मनाने का नियम है। इससे समाज में संगठन, सद्भावना, शक्ति और पारस्परिक प्रेम की वृद्धि होती है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

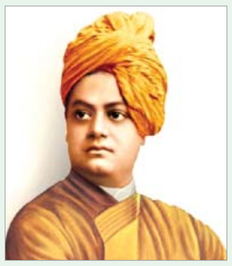

"संसार का इतिहास उन थोड़े-से व्यक्तियों द्वारा बनाया गया है, जिनके पास चरित्रबल का उत्कृष्ट भण्डार था। यों कई योद्धा और विजेता हुए हैं, बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राट हुए हैं, किन्तु इतिहास ने केवल उन्हीं व्यक्तियों को अपने हृदय में स्थान दिया है, जिनका व्यक्तित्व समाज के लिए, मानव जाति के लिए एक प्रकाश स्तंभ का काम कर सका है।

- स्वामी विवेकानन्द

नारी सशक्तीकरण वर्ष प्राणवान हो, उपलब्धियों से परिपूर्ण हो

कार्यक्रम करा लेना ही पर्याप्त नहीं, आवश्यकता है बहिनों को प्रोत्साहन, सम्मान, अवसर मिले, उनका कौशल बढ़े

मुंशीराम बने स्वामी श्रद्धानन्द

मुन्शीराम का प्रारम्भिक जीवन अत्यंत भोगवादी और कई दुर्गुणों से युक्त था। पिता कोतवाल थे, न कोई अभाव था और न ही किसी प्रकार की रोक-टोक। लेकिन उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी भारतीय नारीत्व की जीती जागती मूर्ति थीं। उनकी सेवा, त्याग, नम्रता, उदारता, सहिष्णुता तथा क्षमाशीलता ने मुंशीराम को आमूलचूल बदल दिया।

शिवदेवी का नियम था कि वे सदैव अपने पति के घर लौटने पर उन्हें भोजन गरम बनाकर ही खिलातीं और उनके खा लेने के पश्चात् ही खाती थीं। एक दिन मुंशीराम नृत्य-संगीत की सभा से रात के दो या तीन बजे घर लौटे। गाड़ी से उतर कर अन्दर आते ही जोर की उल्टी हुई। दो कोमल हाथ सहारा दिये उन्हें अन्दर ले आये। वस्त्र बदलवाकर लिटा दिया। वे सो गये, परन्तु शिवदेवी सिर-पैर दबाती रहीं।

काफी देर बाद आँख खुली। आज उनके चर्मचक्षु ही नहीं, ज्ञानचक्षु भी खुले थे। देखा सिगड़ी जल रही है। आटा गुँथा रखा है। पत्नी की ओर दृष्टि गई। वह पैर दबाते-दबाते बैठी ही बैठी सो गई थी। आँखों में आँसू आ गये, हृदय चीत्कार कर उठा। मन पश्चाताप की अग्नि में जलने लगा। मस्तिष्क ने गिरे हुए जीवन से बगावत कर दी। सोचा, मेरे कारण न जाने कितनी रातें इसे यों ही भूखे सो जाना पड़ा होगा।

मुंशीराम ने उसी दिन से अपनी समस्त दुर्बलताओं को तिलांजलि दे दी और जीवन की दिशा मुड़ी तो ऐसी मुड़ी कि फिर पीछे की ओर मुड़कर भी नहीं देखा। विवेक का दिनमान उगा तो फिर ऐसा कि तमिस्रा को चीरता हुआ गगन की छाती पर चढ़ता ही गया। मुंशीराम धर्म-संस्कृति के आदर्श संत स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। उन्होंने अच्छी-खासी चलती हुई वकालत छोड़ी, जज के पद के आकर्षण को कच्चे धागे की भाँति तोड़ दिया। अब उनका एक ही लक्ष्य था लोक-कल्याण। वे उस समय का युगधर्म निभाते हुए भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिए स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े।

हमारे देश में नारी को उसकी सेवा, सृजन, सुधार, संस्कार संवर्धन की विलक्षण प्रतिभा के कारण ही 'देवी' माना जाता है। मुंशीराम की तरह ही राम बोला को उनकी पत्नी ने सन्त तुलसीदास बनाया था और विद्योत्तमा देवी ने नितांत मूर्ख कालीदास को प्रकाण्ड विद्वान बना दिया था।

वर्तमान युग की पुकार

हम इन दिनों बड़े निष्ठुर-संवेदनहीन युग में जी रहे हैं। परिवार सिमटते जा रहे हैं। पाल-पोस कर बड़ा करने वाले माता-पिता पराए लगने लगे हैं, उन्हें वृद्धाश्रमों में कष्ट भरा जीवन जीने के लिए छोड़ दिया जाता है। जेवर, जायदाद, जमीन के लिए खून के रिश्ते भी तार-तार हो रहे हैं। हमारी संस्कृति में बेटियों का विवाह पूरा गाँव मिलकर किया करता था, गरीब का घर बनाने के लिए हर घर से एक-एक ईंट आती थी, लेकिन आज की स्वार्थी मनोवृत्ति लोगों के घर और जमीन बिकवा कर भी गरीबों को दहेज देने और मृतकभोज जैसी दकियानूसी परम्पराएँ अपनाने के लिए मजबूर कर रही है।

आज समाज में लूट, हत्या, महिलाओं के साथ अत्याचार-व्यभिचार, भ्रष्टाचार जैसी जितनी भी विकृतियाँ दिखाई देती हैं, उनके पीछे एक ही कारण है और वह है मानवीय हृदय की शुष्कता, संवेदनहीनता, निष्ठुरता।

विश्व के उन समर्थ देशों की तो क्या कहें जो महिषासुर की तरह सारी दुनिया पर अपना कब्जा करने के लिए आतुर हैं, लेकिन ऐसे देशों की भी कमी नहीं है जिनकी अपनी प्रजा भूख, गरीबी, बीमारियों से मर रही है और फिर भी उन पर बम-बारूद से दुनिया को भयभीत करने का उन्माद हावी है। कुछ देश अपनी संकीर्ण धार्मिक मान्यताओं के वशीभूत होकर मानवता खोते और आतंकवाद को पालते जा रहे हैं।

नारी जागरण समय की माँग है

इन सारी विकृतियों की जड़ तालाशनी हो तो अपने मिशन की पुस्तक *'प्रबुद्ध नारियाँ आगे आएँ'* पढ़िये। आरंभिक पृष्ठ पर ही वर्णन है कि मानव में देव और दानवों को भी परास्त करने की क्षमता है। देव-दानव इससे परेशान थे। वे ब्रह्मा जी के पास गए और मनुष्य से बढ़कर अधिकारों की याचना की। ब्रह्माजी ने विचार किया और उत्तर दिया, ''जब तक मनुष्य को मानवी 'नारी' की शक्ति मिलती रहेगी, वह अजेय रहेगा। हम उसके लिए कुछ नहीं कर सकते।''

नारी की यह गौरव-गरिमा और सामर्थ्य आज के पुरुष प्रधान समाज में अत्यंत क्षीण हो गई है। इसी से समाज भटक रहा है और कमजोर हो रहा है। इसका दुष्परिणाम सारी मानवता और जीवमात्र को भुगतना पड़ रहा है।

नारी क्या है? नारी मात्र पुरुष से अलग शारीरिक संरचना नहीं है। उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ 4 पर परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं, *''नारी देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है। नारी की विशेषता है उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति। बेटी, बहिन, धर्मपत्नी और माता के रूप में वह परिवार के लिए जिस प्रकार उदात्त आदर्श से भरापूरा जीवनयापन करती है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पुरुषार्थ प्रधान नर अपनी जगह ठीक है, पर आत्मिक सम्पदा की दृष्टि से वह नारी से पीछे ही रहेगा।''*

''नारी विधेयात्मक शक्ति है। जो काम पुरुष शक्ति-तांडव द्वारा करता है, नारी उसे स्नेह, सरल और सौम्यतापूर्वक सम्पन्न कर लेती है।''

उपरोक्त कथन में परम पूज्य गुरुदेव ने जिस आत्मिक सम्पदा का उल्लेख किया है, वह स्नेह, संवेदना, सेवा, त्याग, नम्रता, उदारता, सहिष्णुता, क्षमाशीलता, परदुःख कातरता, परमार्थ-परायणता जैसे सद्गुण हैं। नारी इन सद्गुणों का समुच्चय है। नारी ही वह दिव्य शक्ति है जिसके जागरण से वर्तमान युग की नारकीय परिस्थितियों को स्वर्ग में बदला जा सकता है। यद्यपि यह आध्यात्मिकता, यह सद्गुण पुरुष और नारी दोनों में विद्यमान होते हैं, संसार के नवोन्मेष के लिए दोनों में ही इन्हें जाग्रत् और विकसित किया जाना है, तथापि सृजेता ने नारी को इन गुणों की प्रधानता के साथ गढ़ा है, इसलिए नारी जागरण आज के युग की सर्वोपरि आवश्यकता है।

नारी की विशेषताओं के संदर्भ में महापुरुषों ने भरपूर गुणगान किया है। सुप्रसिद्ध विचारक अरस्तु कहते हैं, ''नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्धारित है।''

महात्मा गाँधी का कथन है, ''पुरुष पहले ही अहंकारपूर्वक यह मान लेता है कि स्त्री की अपेक्षा उसका ज्ञान अधिक ऊँचा है, लेकिन अक्सर उसकी स्वाभाविक सूझबूझ पुरुष के इस ज्ञान से ज्यादा सिद्ध हुई है।''

नारी सशक्तीकरण वर्ष

युग निर्माण आन्दोलन को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए गायत्री परिवार अनेक आन्दोलन चला रहा है। इसी क्रम में परम वन्दनीया माताजी की जन्मशताब्दी-2026 को देखते हुए आगामी तीन-चार वर्ष 'नारी सशक्तीकरण' के लिए चुने गए हैं। स्नेह सलिला परम वन्दनीया माताजी नारी जागरण अभियान की प्रणेता और पुरोधा हैं। इस दृष्टि से नारी जागरण और नारी सशक्तीकरण उनकी जन्मशताब्दी पर दी जाने वाली सर्वोत्तम श्रद्धाञ्जलि होगी। निःसंदेह जन-जन के अंतःकरण में स्नेह और शक्ति के रूप में विद्यमान 'माँ' हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए भरपूर शक्ति प्रदान करेंगी। यह सद्ज्ञान की प्रतीक 'अखण्ड ज्योति' प्राकट्य का शताब्दी वर्ष भी है। इस दृष्टि से सद्ज्ञान विस्तार पर भी हमें ध्यान देना है।

टोली प्रशिक्षण शिविर शृंखला

अखण्ड ज्योति, प्रज्ञा अभियान आदि मिशन की पत्रिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत नारी सशक्तीकरण वर्ष की प्रेरणा तो विगत वसंत पर्व से ही दी जाने लगी थी, लेकिन इस वर्ष के विशेष कार्यक्रमों की शृंखला आगामी गुरुपूर्णिमा से आरंभ हो रही है। प्रथम चरण में पूरे देश में लगभग 50-60 प्रशिक्षण शिविर रखे जा रहे हैं। शान्तिकुञ्ज से ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोलियाँ इनका संचालन करेंगी। इन पाँच दिवसीय आवासीय शिविरों में वे बहिनें भाग लेंगी, जो नारी सशक्तीकरण वर्ष के क्षेत्रीय कार्यक्रमों के संचालन के लिए समयदान देने में समर्थ हों।

परिजनों के पास इस अंक के पहुँचने तक प्रशिक्षण शिविर शृंखला और उसकी रूपरेखा लगभग निर्धारित की जा चुकी होगी। इसे ईमेल, व्हॉट्सएप जैसे माध्यमों से सम्बद्ध लोगों तक पहुँचा दिया जाएगा। दूसरी ओर जहाँ प्रशिक्षण होंगे उन केन्द्रों पर भी उपयुक्त बहिनों के चयन और पंजीयन का कार्य चल रहा होगा।

नारी सशक्तीकरण वर्ष प्रधान कार्यक्रमों की क्षेत्रीय शृंखला शारदीय नवरात्र से आरम्भ होगी। इनका संचालन शान्तिकुञ्ज और आगामी शिविरों में प्रशिक्षित बहिनों की टोलियाँ करेंगी।

अभियान उद्देश्यपूर्ण हो

बात कार्यक्रम करा लेने भर की नहीं है। बात नारी के उस गौरवशाली स्वरूप को पुनर्जीवित करने की है, जिसमें परिवार और समाज को बदलने की क्षमता है। नारी के उस स्वरूप को उद्घाटित करने की है जो मुंशीराम को स्वामी श्रद्धानंद, राम बोला को संत तुलसीदास बना देती है। उस मातृत्व को उभारने की है जिसकी कोख में पलकर बालक भरत में सिंह-शावकों के दाँत गिनने की और शिवाजी में शेरनी का दूध लाने की सामर्थ्य आती है। आज वह देवी अपनी सामर्थ्य से अबोध, दबी-कुचली दिखाई देती है। तरह-तरह की मूढ़ मान्यताओं के मकड़जाल में से उसे निकालना है, कुरीतियों के दल-दल से उसे उबारना है।

इतिहास साक्षी है कि परम वंदनीया माताजी के नारी जागरण अभियान ने हजारों-लाखों बहिनों को उस देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया है, जिनकी श्रद्धा-सक्रियता स्वार्थ के लिए नहीं, समाज के लिए अधिक दिखाई देती है। लाखों देवियों ने अपने परिवार की परिस्थितियाँ बदल दीं। उनकी श्रद्धा, संस्कार, विचारों से प्रभावित होकर जो लोग पहले उनकी सामजिक गतिविधियों का विरोध करते थे, उन्होंने न केवल सहर्ष अनुमति दी बल्कि स्वयं और पूरा परिवार युग निर्माणी विचारधारा में ढलता चला गया।

ऐसे परिवर्तन मात्र एक कार्यक्रम से संभव नहीं। कार्यक्रम से प्रेरित होकर कुछ लोग बदल जायें, इससे भी बात नहीं बनेगी। इसके लिए सतत अभियान चलाने की आवश्यकता है। क्या किया जा सकता है, इस संदर्भ में कुछ ध्यानाकर्षक बिन्दु प्रस्तुत हैं।

बहुत कुछ किया जा सकता है

स्वाध्याय आरंभ करें : जिन्हें टोली प्रशिक्षण लेना है या जो अपने क्षेत्र में विविध कार्यक्रमों, यज्ञ-संस्कार आदि का संचालन करते हैं, ऐसे बहिन-भाइयों को नारी जागरण सम्बन्धी साहित्य का नियमित स्वाध्याय आरंभ कर देना चाहिए। इससे विषय वस्तु का प्रशिक्षण और प्रस्तुति प्रभावशाली होती जाएगी।

वातावरण बनाना होगा : अपने क्षेत्र की बहिनों में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए क्या किया जा सकता है, इस पर महिला मण्डल या छोटी-छोटी गोष्ठियों में निरंतर चर्चा होनी चाहिए। परिवर्तन अचानक ही नहीं हो जाते। ऐसी चर्चाओं से क्षेत्र में व्याप्त कुरीतियों-मूढ़ मान्यताओं के विरुद्ध वातावरण तैयार होता है।

जीवन्त प्रमाण दें : गायत्री उपासना से जुड़कर या मिशन की गतिविधियों में भाग लेकर लोगों के जीवन में जो सकारात्मक बदलाव आये हैं, उनका संकलन करना चाहिए और संगोष्ठी-समारोहों में ऐसे उदाहरण दिये भी जाने चाहिए। प्रत्यक्ष घटनाएँ बड़े-बड़े प्रवचनों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होती हैं।

विश्वास करो-जिम्मेदारी सौंपो : बहिनों को घर-परिवार या समाज-समारोहों में बड़ी जिम्मेदारियाँ दी जानी चाहिए। संभव है आरम्भ में कार्य बहुत प्रभावशाली न हों, लेकिन दक्षता अभ्यास से ही आती है। बहिनों को जब भी अवसर मिले उन्होंने शानदार काम कर दिखाए हैं। बढ़ती सफलताओं के साथ ही हौसले बुलंद होते हैं और निरर्थक घरेलु चर्चाओं से उन्हें बाहर लाकर समाजोपयोगी कामों में लगा पाना संभव होता है।

प्रबुद्ध बहिनों से संपर्क : समाज की प्रबुद्ध एवं प्रभावशाली बहिनों से सम्पर्क अभियान अविलम्ब आरम्भ कर देना चाहिए। उन तक मिशन का साहित्य पहुँचाया जाना चाहिए और अपने छोटे-बड़े कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाना चाहिए। संगठन में हजार हाथियों का बल होता है। सबके सम्मिलित प्रयासों से समाज सुधार के काम आसान हो जाएँगे।

साहित्य स्थापना : सद्ग्रंथ स्थापना अभियान में नारी जारण सम्बन्धी साहित्य का समावेश हो और सभी को उसके स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

शुभारम्भ स्वयं से हो : अपने मिशन के कार्यकर्त्ता अपने परिवार की बहिनों को आगे लाने और जिम्मेदारियाँ सौंपने का आदर्श प्रस्तुत करें।

संभावनाएँ अनेक हैं। आवश्यकता एक ही है-भाव संवेदनाओं का जागरण। नारी सशक्तीकरण वर्ष यही संदेश लेकर आया है। सृजन की देवी को अवसर और सम्मान मिले, उसका मनोबल बढ़े, तभी समाज का कायाकल्प संभव है।

बेहतर समाज की संरचना हेतु कार्ययोजनाएँ और उनका क्रियान्वयन

उत्तराखण्ड उत्कर्ष कार्ययोजना

प्रदेश को स्वावलम्बी, नशामुक्त एवं संस्कारवान बनाने के लिए शान्तिकुञ्ज की विशिष्ट पहल

टिहरी में आयोजित शिविर को सम्बोधित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे

बेरोजगारी और भौतिक सुख-सुविधाओं की चाह के बीच उत्तराखण्ड के पहाड़ों की जवानी को पलायन से रोक कर प्रदेश के विकास में सहयोगी बनाना प्रदेश सरकार और समाज दोनों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। यह पलायन रोका नहीं गया तो अपनी सीमाओं की सुरक्षा और उत्तराखण्ड के सनातन आध्यात्मिक वैभव को सुरक्षित रखने में भी परेशानियाँ बढ़ेंगी।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से प्रदेश के मूर्धन्यों की मुलाकात होती ही रहती है। इन वार्ताओं में उत्तराखण्ड के पलायन को रोकने पर भी प्रमुखता से चर्चा होती रही है। चूँकि गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज पूरे प्रदेश की सांस्कृतिक आस्था का केन्द्र बनता जा रहा है एवं समाज को भी इस दिशा में शान्तिकुञ्ज से बड़ी आशाएँ हैं। अतः शान्तिकुञ्ज ने उत्तराखण्ड के गाँव-गाँव में स्वावलम्बन, नशा उन्मूलन और संस्कार संवर्धन के लिए 'उत्तराखण्ड उत्कर्ष' योजना बनाई है।

47 टोलियाँ सक्रिय हुई

उत्तराखण्ड उत्कर्ष के संदर्भ में दिनांक 21 से 25 मई 2022 की तिथियों में गायत्री शक्तिपीठ नई टिहरी में गढ़वाल मण्डल स्तरीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सम्मेलन हुआ। पौड़ी गढ़वाल, देहरादून, चमोली, उत्तरकाशी, टिहरी गढ़वाल जिलों के मिशन की जिम्मेदारियाँ सँभालने वाले 71 प्रमुख कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों ने भाग लिया। शान्तिकुञ्ज से पहुँची प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री केदार प्रसाद दुबे, श्री गौरीशंकर सैनी एवं श्री आशीष सिंह की टोली ने पूरी योजना के एक-एक बिन्दु को बड़ी बारीकी से समझाया, सिखाया और भावी कार्ययोजना बताई।

समग्र योजना को कार्यकर्त्ता उत्तराखण्ड में सांस्कृतिक परिवर्तन का एक क्रान्तिकारी कदम मान रहे हैं। अविलम्ब सक्रियता के संकल्प उभरे। जन-जन तक, घर-घर तक सम्पर्क कर योजना को क्रियान्वित करने के लिए 47 टोलियाँ गठित हुईं।

इस वर्ष की सक्रियता के संकल्प

- हर जनपद में कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर और 61 विकासखण्डों में संगोष्ठियाँ आयोजित कर योजना को क्रियान्वित करने के लिए 556 कार्यकर्त्ताओं को सक्रिय करने और 85 टोलियाँ बनाने का संकल्प लिया गया।
- घर-घर संपर्क कर देवस्थापना, गंगाजली और युग साहित्य स्थापना का उत्साह उभरा।
- पाँचों जिलों में 26 स्वावलम्बन प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष लगाए जाएँगे।
- नगर गाँवों में नारी सशक्तिकरण वर्ष के कार्यक्रम आयोजित करने, स्कूलों में नशामुक्ति के कार्यक्रम कराने, प्रज्ञा केन्द्र स्थापित करने तथा गायत्री साधक तैयार कर उन्हें संजीवनी साधना शिविर में शान्तिकुञ्ज भेजने का लक्ष्य निर्धारित हुआ।

स्वर्ण रेखा नदी स्वच्छता अभियान

जन्म शताब्दी वर्ष-2026 तक की कार्ययोजना

झारखण्ड, बंगाल और ओडिशा के सृजनशील युवाओं ने अखण्ड ज्योति प्रज्वलन तथा परम वन्दनीया माताजी की जन्मशताब्दी-2026 में तीनों राज्यों से होकर प्रवाहित होने वाली स्वर्ण रेखा नदी को स्वच्छ-निर्मल बनाकर समर्पित करने की योजना बनाई और संकल्प लिया है।

तीनों राज्यों के सृजनशील युवाओं का एक 30 सदस्यीय दल शान्तिकुञ्ज आया। निर्मल गंगा जन अभियान का संचालन एवं मार्गदर्शन कर रहे रचनात्मक प्रकोष्ठ एवं पूर्वी जोन के प्रभारियों से विस्तृत चर्चा की। कार्ययोजना पर गहन विचार-विमर्श के बाद चरणबद्ध प्रारूप तैयार कर लिया गया है। गुरुधाम में गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना के साथ श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से प्रेरणा-आशीर्वाद लेकर लौटे यह युवा विश्व पर्यावरण दिवस-5 जून 2022 से ही इस अभियान का शुभारंभ कर रहे हैं। योजना के अन्तर्गत निर्मल गंगा जन अभियान के पाँचों चरण-जलशुद्धि, तटशुद्धि, तटीय गाँव शुद्धि, दूषित जलस्रोत प्रबंधन, सच्चा तीर्थ सेवन पर कार्य किया जाएगा। सारा कार्य शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में होगा।

स्वर्ण रेखा नदी - राँची (झारखण्ड) से बालेश्वर (ओडिशा) तक

यह नदी राँची शहर से 16 कि.मी. दूर दक्षिण-पश्चिम में रानी चुआं नामक स्थान से निकलती है। यह झारखण्ड के बाद बंगाल और ओडिशा से गुजरती हुई ओडिशा के बालेश्वर नामक स्थान पर बंगाल की खाड़ी में समाती है। इसकी कुल लम्बाई 474 कि.मी. है और 28928 वर्ग कि.मी. का जल निकास इसके द्वारा होता है।

स्वर्ण रेखा और उसकी प्रमुख सहायक नदी करकरी में आज भी सोने के कण पाये जाते हैं, इसलिए इसका नाम स्वर्ण रेखा नदी पड़ा है। यह सोने के कण कहाँ से आते हैं, यह आज भी रहस्य ही बना हुआ है।

तालाब की सफाई में जुट गए युगसेनानी

सक्ती, जांजगीर चांपा। छत्तीसगढ़

गंगा सप्तमी के शुभ अवसर पर प्रज्ञा मण्डल एवं महिला मण्डल धनसीर द्वारा सक्ती शहर के पावन जल स्थल माँ महामाया मंदिर तालाब की सफाई की गई। इस अभियान के मुखिया एवं मार्गदर्शक श्री विनय साहू व प्रहलाद साहू जी रहे। महिला मण्डल की ओर से विद्या साहू जी ने जिम्मेदारी सँभाली।

सक्ती में तालाब की सफाई में जुटे परिजन

'भटका हुआ देवता' मन्दिर की स्थापना

शान्तिकुञ्ज में दर्शन कर अभिभूत हुए श्री अनिल सिंह

शक्तिपीठ में स्थापना कराई, कहा-हर व्यक्ति को यह साधना करनी चाहिए

अम्बिकापुर। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ अम्बिकापुर में अत्यंत भव्य समारोह के साथ 'भटका हुआ देवता' मंदिर की स्थापना हुई। लोकार्पण समारोह उपजोन स्तरीय था, जिसमें सरगुजा उपजोन के पाँचों जिले-जशपुर, बलरामपुर, अम्बिकापुर, सूरजपुर और बैकुण्ठपुर के सैकड़ों परिजन, कई प्रतिष्ठित संगठन और शहर की गणमान्य हस्तियाँ उपस्थित थीं।

'भटका हुआ देवता' का यह मंदिर अम्बिकापुर के श्री अनिल सिंह और उनकी धर्मपत्नी सरिता के संकल्प की सुखद परिणति है। वे एक बार शान्तिकुञ्ज आए। यहाँ भटका हुआ देवता मंदिर के दर्शन ने उन्हें बेहद प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को एक बार शान्तिकुञ्ज आकर इसका दर्शन समझना चाहिए। आत्मसाधना और आत्मसुधार का यह अति उत्तम मार्ग है। आगे चलकर श्री अनिल सिंह ने गायत्री शक्तिपीठ अम्बिकापुर में भी इसी प्रकार के भटका हुआ देवता मंदिर की स्थापना करा दी।

भटका हुआ देवता मंदिर का उद्घाटन समारोह एक विशाल पारिवारिक सम्मेलन के रूप में सम्पन्न हुआ। प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री ओमप्रकाश राठौर को इस समारोह में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में श्रोताओं को इस स्थापना के माध्यम से अन्तर्मन में झाँकने और आत्मविभूतियों को पहचानकर उन्हें विकसित करने की साधना करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पारिवारिक उत्कर्ष के युगनिर्माणी सूत्रों की चर्चा भी की।

श्री ओमप्रकाश राठौर और ब्रह्मकुमारी विद्या बहिन दीप प्रज्वलन करते हुए

समारोह में अनेक आध्यात्मिक-सामाजिक संगठन तथा गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लेकर भटका हुआ देवता के तत्त्वदर्शन और स्थापना की सराहना की। ब्रह्मकुमारी विद्या बहिन ने निष्ठावान प्रज्ञा परिजनों के विशाल परिवार को सामाजिक उत्कर्ष का प्रकाश स्तंभ बताया। आर्ट ऑफ लिविंग, पतंजलि योग, धर्म जागरण, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह में विख्यात समाजसेवी डॉ. यू.एन. तिवारी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री विवेक शुक्ला, बलरामपुर के जॉइण्ट कलेक्टर श्री आर.एन. पाण्डेय भी उपस्थित थे।

दिया, मुम्बई ने मनाया अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस

दीपयज्ञ एवं प्रज्ञा संगीत संध्या में कोरोना योद्धा एवं कोरोना से दिवंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना की

परेल, मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया, मुम्बई पिछले कुछ वर्षों से 12 मई 'अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस' पर केईएम नर्सिंग कॉलेज में विशेष कार्यक्रम आयोजित कर कोरोना योद्धाओं के प्रति अपना सम्मान व्यक्त कर रहा है। उनके द्वारा कॉलेज में दो तुलसी वृंदावनों की स्थापना की गई और कई अस्पतालों में नर्सों को सम्मान के तौर पर तुलसी की पौध व साहित्य दिया गया।

इस वर्ष केईएम नर्सिंग कॉलेज में प्रज्ञा संगीत संध्या हुई, जिसमें कोविड योद्धाओं एवं दिवंगत आत्माओं के हितार्थ गायत्री मंत्र का जप तथा विशेष प्रार्थना की गई। कार्यक्रम में सभी स्टाफ सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित थे। प्रसाद स्वरूप सभी को पूज्य गुरुदेव का साहित्य दिया गया। डॉ. प्रतिमा नाइक व आरती नांगरेजी ने इस कार्यक्रम को आयोजित करने में विशेष सहायता की।

नर्सों को दिया युगसाहित्य का प्रसाद

यज्ञ विज्ञान प्रदर्शनी की ओर रहा बुद्धिजीवियों का आकर्षण

जैसलमेर। राजस्थान

जैसलमेर में आयोजित 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के अंतर्गत यज्ञ विज्ञान प्रदर्शनी लगाई गई। दिया (डिवाइन इण्डिया यूथ एसोशिएशन) द्वारा यह प्रदर्शनी देव संस्कृति विश्वविद्यालय के याज्ञवल्क्य यज्ञ अनुसंधान केन्द्र के निर्देशन में लगाई गई थी। इसके द्वारा ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान और देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा यज्ञ विज्ञान पर की गई शोध के सत्परिणामों से लोगों को अवगत कराया गया। यज्ञ से प्रदूषण निवारण, यज्ञ चिकित्सा, जीवाणुओं और विषाणुओं के नष्ट होने, कृषि में लाभ आदि के प्रयोग-परीक्षण और उनके परिणाम प्रदर्शनी के माध्यम से लोगों को बताए गए।

यह प्रदर्शनी लोगों को यज्ञ चिकित्सा सम्बन्धी मार्गदर्शन देती रही। अलग-अलग रोगों के लिए अलग-अलग औषधियों से

निर्मित हवन सामग्रियाँ, यज्ञ की विधाएँ और उनके संदर्भ में परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भी वहाँ उपलब्ध था। अपनी तरह के इस विशिष्ट प्रयोग ने लोगों को बहुत आकर्षित किया। शहर के चिकित्सक, विद्यार्थी और बुद्धिजीवी इसे देखकर बहुत प्रभावित हुए। दिया जैसलमेर की ओर से आशु सिंह, नरेंद्र सिंह, मुकुट शर्मा, गगेंद्र सिंह, नरपत लाल शर्मा, शारदा खत्री, माया बोरावट, किरण कंवर, ज्योति कंवर, अनीता शर्मा आदि ने प्रदर्शनी के निर्माण और संचालन में अपना योगदान दिया।

शक्तिपीठ की आदर्श स्वचालित व्यवस्था

औरंगाबाद। महाराष्ट्र : उल्लेखनीय है कि यह एक ऐसा चेतना केन्द्र है, जिसकी व्यवस्थाएँ सँभालने के लिए प्रतिदिन की 15 से 20 लोगों की टीम है। व्यवस्था, स्वावलम्बन, पौधारोपण और परिव्रज्या के सभी कार्य यह टीम सँभालती है। केन्द्र व्यवस्थापक श्री राजेश टांक ने बताया कि नगर के साधकों के सहयोग से चेतना केन्द्र की व्यवस्था चलाने का हमारा प्रयोग बहुत सफल रहा है, यह संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।

बुद्धि को झुकाने तथा मोड़ने की मशीन विज्ञान नहीं, सत्संग बनाता है। उसमें मानव जहाँ चाहे घूम सकता है। बुरों के संग से वह रसातल में जा सकता है और संतों के संग से वह भू-मण्डल का सूर्य भी बन सकता है। -**महात्मा विनोबा**

देव परिवार विस्तार महायज्ञों से युगशक्ति गायत्री का व्यापक विस्तार

नवदीक्षितों को भेंट किए शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती स्मारक डाक टिकट

टाटानगर। झारखण्ड
22 से 24 अप्रैल की तिथियों में बागबेड़ा के शिव हनुमान मंदिर प्रांगण में विशाल यज्ञायोजन हुआ। पाँच शाखाओं-जुगसलाई, नया बाजार, बाबा कुटी, बजरंग टेकरी, नया बस्ती एवं हर-हर गुट्टु के सम्मिलित प्रयास से सम्पन्न इस यज्ञ में यज्ञ 300से अधिक नये परिजनों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। गायत्री शक्तिपीठ टाटानगर ने सभी नवदीक्षित परिजनों को शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित 'डाक टिकट स्मारक' भेंट कर सम्मानित किया एवं उनके दीक्षा संस्कार को चिर स्मरणीय बनाया।

इस यज्ञ में शहर की कई धार्मिक संस्थाओं ने योगदान दिया। सर्वश्री विमल यादव, गणेश चौबे, सीताराम भगत, श्रीमती मंजू सिंह, ऊषा सिंह, श्रीमती बेबी आदि परिजनों के तन, मन, धन से किए गए योगदान ने इस कार्यक्रम को अविस्मरणीय सफलता प्रदान की। गणमान्य अतिथि श्रीमती इंदिरा परमार, श्री रजंय कुमार राय प्रिंसिपल सरस्वती शिशु मंदिर बागबेड़ा का उत्साहवर्धक सहयोग मिला।

इससे पूर्व सोनारी, टाटानगर में दिनांक 26 से 28 मार्च 2022 को देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें 77 भाई-बहिनों ने दीक्षा ली। 15 से 18 अप्रैल 2022 अग्रसेन भवन मुसाबनी में आयोजित पावन प्रज्ञा पुराण कथा एवं 9 कुण्डीय यज्ञ हुआ, जिसका संचालन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शशिकान्त सिंह की टोली ने किया। एक मुस्लिम परिवार (अहमद जी) के सभी सदस्यों ने पूरे मनोयोग से प्रज्ञा पुराण कथा सुनी। उन्होंने 35 किलो प्रसाद भी भेंट किया।

सद्ग्रंथों की आरती उतारती बालिकाएँ एवं दीपयज्ञ की मनोरम छटा

108 कुण्डीय यज्ञ : गायत्रीमय हुआ वनवासी अंचल

बाँसवाड़ा। राजस्थान
राजस्थान के वनवासी बहुल जिले बाँसवाड़ा में शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वर्ष का उत्सव 11 से 14 मई की तिथियों में देव परिवार विस्तार 108 कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ मनाया गया। आजाद चौक से भारत माता मंदिर तक 1008 कलशों की 1.5 किमी लम्बी भव्य शोभायात्रा निकली। राती तलाई के भारत माता मन्दिर के मैदान में 48 डिग्री तापक्रम में भी नगरवासी पूरे उत्साह से यज्ञ में भाग ले रहे थे। 165 दिन की नर्मदा परिक्रमा कर लौटे महामण्डलेश्वर श्री उत्तम स्वामी महाराज ने कहा कि इस 108 कुण्डी गायत्री महायज्ञ से जो ऊर्जा उत्पन होगी, उससे पूरे क्षेत्र का पवित्रीकरण होकर रोग, शोक, संताप से मुक्ति होगी। नगर सभापति श्री जैनेन्द्र त्रिवेदी तथा राजस्थान सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री महेन्द्रजीत सिंह मालविया ने मानवीय उत्कर्ष के लिए आयोजित इस पवित्र अनुष्ठान के लिए गायत्री परिवार का आभार जताया।

पूर्णाहुति की पूर्व संध्या में 5100 दीपों से युक्त दीपयज्ञ हुआ। आयोजन में गायत्री परिवार के प्रमुख संगठक डॉ. दिनेश भट्ट, सुश्री आशा बहिन द्विवेदी, श्री भूपेन्द्र पण्ड्या, श्री सुरेश जोशी, डॉ युधिष्ठिर त्रिवेदी, श्री हरभगवान घींगरा श्री पुष्पेन्द्र पण्ड्या, श्री अम्बालाल पंचाल, श्री कमलेश दोसी, श्री जयप्रकाश द्विवेदी आदि ने विविध व्यवस्थाएँ सँभालीं।

गणमान्यों ने दीक्षा ली
750 से अधिक गुरुदीक्षा, 15 पुंसवन संस्कार तथा अनेक मुंडन संस्कार हुए। जी. जी. टी. युनिवर्सिटी के कुलपति श्री आई.वी. त्रिवेदी, मयूर फेब्रिक्स के सीईओ श्री योगेन्द्र तिवारी, इण्डिया सीमेंट के प्रोजेक्ट हेड श्री यतीन्द्र शाह तथा अतिरिक्त कलेक्टर श्री पालावत जी दीक्षा लेने एवं सद्ग्रंथ स्थापना कराने वालों में प्रमुख थे।

मंत्री जी का आश्वासन
स्थानीय विधायक तथा राज्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह बामनिया ने शक्तिपीठ के लिए अतिशीघ्र भूमि आबंटन तथा अन्य सभी प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

पूरे चूरू उपजोन का सघन मंथन हुआ

सद्ग्रंथ स्थापना पर केन्द्रित थे कार्यक्रम

चूरू। राजस्थान
इस वर्ष शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित देव परिवार निर्माण गायत्री महायज्ञ शृंखला के अन्तर्गत उपजोन के पाँचों जिले-श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, झुंझुनू, चूरू और बीकानेर का सघन मंथन किया गया। 20 मार्च से लेकर 13 मई की तिथियों में हर जिले में विशाल यज्ञीय आयोजन सम्पन्न हुए। हनुमानगढ़ जंक्शन में 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, हनुमानगढ़ जिले के भादरा शहर में 24 कुण्डीय यज्ञ, चूरू जिले के सादुलपुर नगर में 51 कुण्डीय यज्ञ, बीकानेर नगर की सर्वोदय बस्ती में 24 कुण्डीय यज्ञ, चूरू जिले के तारानगर में 31 कुण्डीय यज्ञ, हनुमानगढ़ जिले के टिब्बी में 24 कुण्डीय यज्ञ अत्यंत श्रद्धा और उल्लासभरे वातावरण में सम्पन्न हुए।

घर-घर सद्ग्रंथों की स्थापना उपरोक्त कार्यक्रमों का प्रमुख लक्ष्य था। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री बालरूप शर्मा और श्री सुरेन्द्रनाथ वर्मा की टोली ने पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व और उनके विचारों की सामर्थ्य बड़े प्रभावशाली शब्दों में समझाई। प्रत्येक कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने सद्ग्रंथों की स्थापना कराई और विविध संस्कार कराए।

24-24 कुण्डीय यज्ञ के दो कार्यक्रम क्रमशः श्री डूंगरगढ़, जिला बीकानेर तथा चिड़ावा, जिला झुंझुनू में सम्पन्न हुए। इन्हें आंचलिक केन्द्र पुष्कर की श्री गोपाल स्वामी की टोली ने सम्पन्न कराया। पूरे उपजोन के मंथन में उपजोन समन्वयक श्री बालदान चारण तथा जिला संयोजक हनुमानगढ़ के श्री धन्नेसिंह राठौड़, चूरू के श्री ओमप्रकाश पारीक, झुंझुनू के श्री गोविन्दराम सोनी का विशिष्ट योगदान रहा।

उपजोन के सघन मंथन का सत्परिणाम यह था कि बुद्ध पूर्णिमा के दिन आयोजित गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के अन्तर्गत पूरे उपजोन में 24000 घरों में यज्ञ कराने का संकल्प लिया गया।

इन यज्ञों के परिणाम स्वरूप उपजोन में 24000 घरों में गायत्री यज्ञ कराने के संकल्प उभरे थे।

हनुमानगढ़ में सद्ग्रंथ स्थापना तथा टिब्बी की कलश यात्रा का मनोरम दृश्य

400 कार्यकर्त्ताओं की सक्रियता का अभिनन्दन

नालंदा। बिहार
6 से 9 मई की तिथियों में नालंदा के गायत्री शक्तिपीठ प्रांगण में 24 कुण्डीय यज्ञ एवं कार्यकर्त्ता सम्मान समारोह आयोजित हुआ। कलश यात्रा का शुभारंभ विधायक श्रीमती रीना यादव एवं पूर्व विधायक इ. सुनील एवं अन्य गणमान्यों द्वारा प्रथम पूजन के साथ हुआ। पूर्व विधायक ने शान्तिकुञ्ज को धरती के स्वर्ग की उपमा दी, जहाँ पहुँचकर मानव में देवत्व का संचार होता है। श्रीमती रीना यादव ने कहा कि वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान पूज्य गुरुदेव के विचारों में ही दिखाई देता है।

कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री संदीप पाण्डेय की टोली ने किया। उन्होंने शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती एवं परम वन्दनीया माताजी की जन्म शताब्दी को युग परिवर्तन की प्रक्रिया में अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर बताते हुए इस दैवी योजना में भागीदारी से कोई वंचित न रहे, ऐसी अपील की।

कार्यक्रम में जिले के लगभग 400 सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। 40 दीक्षा, 80 विद्यारंभ एवं विविध संस्कार हुए। जिला समन्वयक श्री हरिहर प्रसाद के अलावा गोपाल कृष्ण खत्री, रविन्द्र वर्मा, श्रवण, प्रमोद, अनिल, अजय, अयोध्या प्रसाद, परिव्राजक मिथिलेश कुमार विद्यार्थी, रेणु कुमारी, सुमन, संगीता, माधुरी आदि की कार्यक्रम की सफलता में अग्रणी भूमिका थी।

महापुरश्चरण की पूर्णाहुति और नए संकल्प

हटा। मध्य प्रदेश
13 से 16 मई 2022 तक की तिथियों में गायत्री शक्तिपीठ, हटा में 24 कुडीय गायत्री महायज्ञ संपन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री नमो नारायण पांडे की टोली ने इसे सम्पन्न कराया। इसमें ऋषियुग्म के प्रति अनन्य भाव से समर्पित कार्यकर्त्ता डॉ. सी.एल. नेमा ने 24 लाख गायत्री महामंत्र जप महापुरश्चरण की पूर्णाहुति की। प्रतिवर्ष महापुरश्चरण का यह क्रम जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक चलाते रहने का संकल्प भी लिया। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीमती ऊषा नेमा की प्रथम पुण्य स्मृति में गुरुकार्यों हेतु शान्तिकुञ्ज को सवा लाख रुपए भी दिए एवं धर्मपत्नी की स्मृति में स्वयंसेवी संगठन चलाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर श्रीमती संध्या सिंह राजपूत द्वारा सवा लाख गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान एवं 24 वर्षों में सवा करोड़ गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान करने वाली श्रीमती सुशीला पत्नी, हरिनारायण चौरसिया ने गायत्री महायज्ञ में पूर्णाहुति की।

हटा के यज्ञ में भाग लेते श्रद्धालु

कार्यक्रम की विदाई बेला में केंद्रीय मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, पी.एल. तंतुवाय विधायक हटा, शिवचरण पटेल जिला पंचायत अध्यक्ष की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम में नगरवासियों एवं 24 ग्रामों के प्रज्ञा मंडलों के परिजनों ने भाग लिया। गायत्री शक्तिपीठ प्रबंधक डॉ. विजय सिंह राजपूत के मार्गदर्शन में जगदीश बरसैया, हरिनारायण नेमा, अरुण पटेल, शिव कुमार दुबे, गंगाराम पटेल, जयप्रकाश नेमा, रमेश श्रीवास्तव, राजू दुबे का स्तुत्य सहयोग रहा।

घुमारवीं, बिलासपुर। हिमाचल प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ बिलासपुर एवं गायत्री चेतना केन्द्र घुमारवीं के कार्यकर्त्ताओं के अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप घुमारवीं में आयोजित 11 कुण्डीय यज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा समारोह ने पूरे नगर में युग चेतना का संचार किया। 7 से 11 मई की तिथियों में आयोजित इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री सुखदेव शर्मा की टोली पहुँची थी। सैकड़ों बहिनों ने मस्तक पर सद्ग्रंथ और पवित्र कलश धारण कर गायत्री महामंत्र का गायन करते, जयकारे लगाते हुए पूरे नगर का भ्रमण किया। प्रज्ञा पुराण के माध्यम से आज के युग में सच्चाई और अच्छाई के रास्ते पर चलते हुए जीवन को उत्कृष्ट बनाने के सूत्र हृदयंगम किए। बड़ी संख्या में संस्कार भी सम्पन्न हुए।

श्रद्धा-साधना से युक्त 25वाँ स्थापना दिवस

डाबरग्राम, देवघर। झारखड
दिनांक 5 मई को गायत्री शक्तिपीठ डाबरग्राम, देवघर ने अपनी स्थापना का 25वाँ वार्षिकोत्सव नौ कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ मनाया। 600 श्रद्धालुओं ने यज्ञ में भाग लेते हुए युगऋषि के संकल्पों को साकार करने में अपनी भाव आहुतियाँ समर्पित कीं। कार्यक्रम की प्रमुख झलकियाँ-

- 24 घण्टे का अखण्ड जप रखा गया। 307 साधकों ने इसमें भागीदारी करते हुए 24 लाख गायत्री महामंत्र जप किया।
- 24000 हस्त लिखित गायत्री महामंत्र माँ गायत्री के श्री चरणों में समर्पित किए गए।
- माता भगवती देवी सेवार्थ चिकित्सालय का शुभारंभ हुआ।
- दो सभागार एवं कार्यकर्त्ता निवास का लोकार्पण हुआ।

हरिहरपुर, धनबाद। झारखण्ड
गायत्री ज्ञान मंदिर गोमो और धनबाद शाखा के संरक्षण एवं निर्देशन में हरिहरपुर में 9 कुण्डीय गायत्री यज्ञ आयोजित हुआ। नए क्षेत्रों में गायत्री चेतना के विस्तार की दृष्टि से कार्यक्रम को शानदार सफलता मिली। कोरकोट्टा, लुटियाटांड, सिंहडीह, ठाकुरचक, चौरापट्टी, गोमो, तोपचाची, निमियाघाट के परिजनों ने यज्ञ में बड़ी संख्या में भाग लिया। 58 श्रद्धालुओं का दीक्षा संस्कार तथा 37 लोगों का विद्यारंभ संस्कार होना इस यज्ञ की शानदार सफलता कही जा सकती है।

बुद्ध पूर्णिमा पर गृहे-गृहे यज्ञ : देव संस्कृति विस्तार का विराट अभियान था

जिले में 11000 घरों में यज्ञ हुआ, अनवरत चलेगा अभियान

उज्जैन। मध्य प्रदेश
बुद्ध पूर्णिमा के दिन उज्जैन जिले में करीब 11,000 घरों में यज्ञ आयोजन होने की सूचना प्राप्त हुई है। लोगों ने वातावरण परिशोधन का एक सशक्त माध्यम यज्ञ को माना और अपने घर पर यज्ञ किया। जिले में खाचरोद 2500, नागदा में 2000 माकड़ोन 2500, उज्जैन में 1200, महिदपुर में 400, झारडा 300, तराना मे 400, बड़नगर में 300, घटिया में 70 घरों में यज्ञ हुआ। नागदा और उज्जैन शहर में सूक्ष्म यज्ञ पद्धति बहुत लोकप्रिय हुई। लगभग 3000 सूक्ष्म यज्ञ सेट लोगों ने खरीदे। उज्जैन नगर की मानसरोवर कॉलोनी के सभी 41 घरों में यज्ञ संपन्न हुआ।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में यज्ञ करते बच्चे

मीडिया प्रभारी श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि जिले में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान निरन्तर चलता रहेगा। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून से छुट्टी के दिनों में कॉलोनी/ मोहल्ले स्तर पर 24, 51, 101 घरों में एक साथ यज्ञ कराने की योजना बनाई गई है।

जिले में 2056

सर्वाधिक आकर्षक रहे सूक्ष्म यज्ञ

चंद्रपुर। महाराष्ट्र
अखिल विश्व गायत्री परिवार ब्रह्मपुरी शाखा ने 15 व 16 मई 2022 को 639 घरों में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया। इसमें 15 बड़े यज्ञ और 624 सूक्ष्म यज्ञ संपन्न किए गए। प्रत्येक कार्यकर्ता ने विभिन्न गाँवों के नए परिवारों से मुलाकात की और उन्हें आज की स्थिति में यज्ञ के महत्व के बारे में बताया। सभी परिवारों को निःशुल्क सूक्ष्म यज्ञ किट दिए गए।

यज्ञ संपन्न कर रहे परिवारों का कहना था कि यद्यपि यज्ञ छोटा था, लेकिन उससे हमें अत्यंत आनन्ददायक ऊर्जा मिली। ब्रम्हपुरी शाखा ने इस अभियान को पूरी तहसील में पूरे वर्ष चलाने और अगले वर्ष के लिए एक हजार से अधिक घरों में इस सूक्ष्म यज्ञ को करने का संकल्प लिया है।

श्री वेदमाता गायत्री शक्तिपीठ चंद्रपुर के अनुसार पूरे जिले से कुल 2056 घरों में गायत्री यज्ञ संपन्न हुआ। इस आयोजन को सफल बनाने में डॉ. शैलेंद्र कुमार शुक्ला, श्री विनोद मदनकर, श्री वासुदेव राठौर, श्री हनुमान आशेकर, श्री महेश कांपल्लीवार, सौ. नीलम विश्वकर्मा, सौ. जया बारपात्रे, श्री अशोक शर्मा, श्री संदीप दीक्षित, श्री गजानन निचड़, श्री शरद चौबे एवं अनेकों परिजनों ने अपने-अपने दायित्व का निर्वाह किया।

वनवासी बहुल जिले में 2500 यज्ञ

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश : सतत सक्रियता और निरन्तर जनसंपर्क के आधार पर अलीराजपुर की हर तहसील में गृहे-गृहे यज्ञ अभियान बहुत सफल रहा। जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा के अनुसार बुद्ध पूर्णिमा के दिन 2507 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुए।

अलीराजपुर में 633, जोबट में 536, कट्ठीवाडा में 371, छकतला में 314, बोरी में 185, सोडवा में 109, भाबरा में 113 घरों में यज्ञ हुए। नानपुर में 45, उदयगढ़ में 45, खट्टाली में 71, बरझर में 80 और आम्बुआ में 5 घरों में यज्ञ कराते हुए लोगों को सच्चाई और अच्छाई की राह पर चलते हुए साधनात्मक जीवन जीने की प्रेरणा दी गई।

पन्ना जिले में 5100 घरों में

गुन्नौर, पन्ना। मध्य प्रदेश : पन्ना जिले में 5100 घरों में यज्ञ का लक्ष्य रखा गया था। गायत्री परिवार की गुन्नौर शाखा ने इसमें अपना नैष्ठिक योगदान देते हुए 100 से अधिक घरों में यज्ञ कराए। याजकों ने शुद्ध पर्यावरण, सबके स्वास्थ्य लाभ और विश्व-समाज में शान्तिपूर्ण वातावरण की प्रार्थना की।

12 क्विंटल हवन सामग्री लगी

कुम्भराज। मध्य प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ कुंभराज के मार्गदर्शन में बुद्ध पूर्णिमा के दिन चलाए गए गृहे-गृहे यज्ञ अभियान में सैकड़ों गाँवों में सामूहिक यज्ञ प्रयोग सम्पन्न हुए। प्राप्त समाचार के अनुसार कुंभराज के 275 घरों में, बड़ागाँव के 150 घरों में, भवाबद के 25, बहु खेड़ी के 30, गोलहेड़ा के 32, गुलवाड़ा के 24, होल्याही के 24, रामखेजरा के 24 पंजीकृत घरों में यज्ञ हुए। उनके अलावा झरड़ा, खगवारियापुरा, सानई, मर्गवास, बड़नगर, रानीखेजड, लबाचक, पीपलखेड़ी, जोगीराड़ा, मोहनपुर, कान्हाखेड़ी, बरखेड़ा, बडौद, भीमपुरा, तड़ावला आदि अनेक गाँवों में बड़ी संख्या में यज्ञ हुए। इस दिन यज्ञों में 12 क्विंटल हवन सामग्री का प्रयोग हुआ।

छत्तीसगढ़ के एक लाख घरों में यज्ञ का अनुमान

रायपुर जिले में 7500

रायपुर। छत्तीसगढ़
अखिल विश्व गायत्री परिवार छत्तीसगढ़ प्रान्त की समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा ने बताया कि बुद्ध पूर्णिमा के दिन छत्तीसगढ़ में 1 लाख से अधिक घरों में यज्ञ होने का अनुमान है। अकेले रायपुर जिले में ही 7500 से अधिक घरों में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रीमती वर्मा ने बताया कि जहाँ यज्ञ हुआ वहाँ गायत्री और यज्ञ का दर्शन लोगों को समझाने का प्रयास किया गया। उन्होंने बताया कि माँ गायत्री हमें जीवन जीने का दर्शन (सिद्धांत) सिखाती है और यज्ञ भगवान हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं। इन दिनों मानव जाति अनास्था के दौर से गुजर रही है। साधन भरे पड़े हैं, पर साधना का अभाव है। इसी कारण ज्ञान, धन और शक्ति मिलकर भी सुख, शांति और संतुष्टि प्रदान नहीं कर पा रहे।

रायपुर के घरों में यज्ञ करते श्रद्धालु

रायपुर के जिला समन्वयक श्री लच्छूराम निषाद ने बताया कि रायपुर जिले के अनेक घर, प्रतिष्ठान, प्रमुख मंदिर, विभिन्न जनप्रतिनिधियों के घर एवं कुछ कॉलोनियों में सामूहिक यज्ञ भी गायत्री परिजनों के द्वारा सम्पन्न कराए गए।

गुढ़ियारी परिक्षेत्र के अंतर्गत दानवीर भामाशाह वॉर्ड, कन्हैयालाल बाजारी वॉर्ड, ठक्कर बापा वॉर्ड के अंतर्गत श्री तोरण एवं गायत्री परिवार के ट्रस्टी दीनानाथ शर्मा एवं हास्य एवं योग केंद्र गुढ़ियारी के सहयोग से 24 घरों में यज्ञ संपन्न कराया गया। सभी कार्यक्रमों में मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के साथ कोरोना से दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए विशेष आहुति दी गई।

लक्ष्य जन्मशताब्दी : 24 गाँव के 24-24 घरों में स्थापनाएँ

धमतरी। छत्तीसगढ़
जिला धमतरी के पाँचों ब्लॉक-धमतरी, कुरुद, मगरलोड, नगरी एवं भखारा के 5165 घरों में यज्ञ हुआ। जिला समन्वयक दिलीप नाग ने बताया कि भीषण गर्मी, रबी फसल की कटाई, विवाहों के मुहूर्त जैसी प्रतिकूलताओं के बीच भी जिले के लगभग 500 आचार्यों, उपाचार्यों एवं सहयोगी भाई-बहिनों ने इस अभियान को सफलता पूर्वक संपन्न कराया। परम वन्दनीया माता जी के जन्म शताब्दी वर्ष को देखते हुए विशेष योजना के अन्तर्गत जिले के चयनित 24 गाँवों के 24-24 परिवारों में गंगाजल कलश, देवस्थापना एवं सद्विचारों की स्थापना भी की गई। ग्राम गुजरा में 35

परिवारों में यज्ञ हुआ, जिसका संचालन एक साथ प्रज्ञापीठ से एक ही आचार्य द्वारा कराया गया। समग्र अभियान की सफलता में सभी ब्लॉक समन्वयक, शक्ति पीठ, प्रज्ञापीठ, प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल आदि समस्त इकाइयों से जुड़े परिजनों ने पूरे अभियान को गुरुसेवा के भाव के साथ सम्पन्न कराया।

हर क्षेत्र में है उत्साह

ग्यारह हजार घरों में यज्ञ

झाँसी। उत्तर प्रदेश
बुद्ध पूर्णिमा के राष्ट्रीय यज्ञ अभियान में भागीदारी करते हुए झाँसी जिले ने 11000 घरों में यज्ञ कराने का लक्ष्य रखा था, जिसे सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया गया। जिला संगठन ने सभी विकास खण्डों में यज्ञ कराने वालों का पंजीयन करते हुए 10907 घरों में यज्ञ सम्पन्न होने की सूची भेजी है। सर्वाधिक यज्ञ प्रज्ञापीठ एवं शक्तिपीठ झाँसी के परिजनों द्वारा झाँसी नगर में ही कराए गए, जिनकी संख्या 6443 बताई गई है।

5056 घरों में यज्ञ

बिलासपुर। छत्तीसगढ़
उपजोन बिलासपुर के तीनों जिले-मुंगेली, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही और बिलासपुर में 15 एवं 16 मई को कुल 5056 घरों में यज्ञ सम्पन्न हुए। सर्वाधिक 1005 कार्यक्रम बिलासपुर शहर में हुए। विकासखण्ड लोरमी में 480, मुंगेली में 635, बिल्हा में 601, तखतपुर में 460 घरों में यज्ञ हुए। दिया समूह के प्रयासों से 501 घरों में यज्ञ किये गए। इन यज्ञों से गायत्री परिवार का काफी विस्तार हुआ है।

जिले में 4421 घरों में यज्ञ

राजगढ़। मध्य प्रदेश : राजगढ़ जिले की छह तहसीलों के 4421 घरों में यज्ञ हुआ। यह सफलता जिला एवं तहसील समन्वय समिति, जिला एवं तहसील युवा प्रकोष्ठ तथा स्थानीय युवा मंडल, प्रज्ञा मंडल, महिला मंडलों की सामूहिक सक्रियता का सत्परिणाम थी।

दिवंगत देवात्मा को श्रद्धाञ्जलि

श्रीमती गीता देवी शर्मा, इंदौर। मध्य प्रदेश
परम पूज्य गुरुदेव के आतिथ्य सत्कार का सौभाग्य प्राप्त करने वाली माता श्रीमती गीता देवी शर्मा 76 वर्ष की आयु में 9 मई 2022 को सूक्ष्म देह त्यागकरअपनी पावन गुरुसत्ता के साथ एकाकार हो गईं। अपनी मीठी मालवी बोली में इंदौर, देवास और समूचे ग्रामीण अंचल में कार्यकर्त्ताओं में अकूत श्रद्धा का संचार करने वाली स्व. गीता देवी और उनके पति श्री शंकरलाल शर्मा सन् 1964 से ही पूरी तरह से मिशन के लिए समर्पित हो गए थे। उन्होंने मिशन के कार्यों के लिए अपने पति को घरेलू जिम्मेदारियों से मुक्त रखा और दोनों बच्चों ऋषि शर्मा एवं संजय शर्मा को भी गुरुकार्यों में लगाए रखा। परिवार निर्माण का आदर्श प्रस्तुत करने वाली स्व. श्रीमती गीता देवी शर्मा ने परम वंदनीया माताजी की प्रेरणा से सन् 1973 में गायत्री मंदिर निर्माण के लिए अपने आभूषण भी दान कर दिए थे।

श्री हुकुम सिंह यादव, बरेली। उत्तर प्रदेश
ग्राम अहियापुर निवासी प्राणवान कार्यकर्ता श्री हुकुम सिंह यादव का दिनांक 15 अप्रैल 2022 को 90 वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। वे सन् 1971 से मिशन की अथक सेवा कर रहे। अपने क्षेत्र में सक्रियता के साथ साधना अनुष्ठानों में भी उनकी गहरी रुचि रही।

6032 घरों का कीर्तिमान, कारागार में भी हुआ यज्ञ

देवास। मध्य प्रदेश
बुद्ध पूर्णिमा के दिन पर्यावरण संरक्षण, संस्कारों की पुनर्स्थापना, शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष में देव परिवारों के निर्माण जैसे महान लक्ष्य के साथ आयोजित गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के अन्तर्गत देवास जिले में 6032 घरों में पूरे उत्साह एवं श्रद्धा के साथ गायत्री यज्ञ हुए। गायत्री शक्तिपीठ के मीडिया प्रभारी श्री विक्रमसिंह चौधरी ने बताया कि देवास जिले में एक दिन में सर्वाधिक घरों में यज्ञ सम्पन्न होने का यह एक कीर्तिमान था। पिछले एक माह से चल रहे योजनाबद्ध प्रयासों से यह शानदार सफलता मिली।

युवा प्रकोष्ठ के जिला संयोजक प्रमोद निहाले ने सातों तहसील की जानकारी दी। खातेगाँव में 2165, कन्नौद में 500, बागली में 350, सोनकच्छ में 300, सतवास में 53 और हाटपिपल्या में 1400 घरों में यज्ञ हुए। देवास शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र को मिलाकर कुल 1564 घरों में गायत्री यज्ञ हुए। याजकों ने व्यसन मुक्ति एवं वृक्षारोपण सम्बन्धी संकल्प लिए। जिला जेल देवास में भी उमंग और उत्साह के साथ यज्ञ हुआ, जिसमें जेल अधीक्षक हिमानी मनवारे के नेतृत्व में जेल विभाग के परिजन और बन्दी भाईयों ने भाग लिया।

स्त्री क्या है? साक्षात त्याग की मूर्ति है। जब कोई स्त्री किसी काम में जी-जान से लग जाती है, तो वह पहाड़ को भी हिला देती है। – महात्मा गाँधी

उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड में आयोजित हुए विशाल पारिवारिक मिलन समारोह

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से हर वर्ग को मिला प्रोत्साहन

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश
दिनांक 7 मई 2022 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने पं. राम नरेश त्रिपाठी सभागार में आयोजित विशाल सम्मेलन को सम्बोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने उत्तर प्रदेश में प्रदेशिक स्तर पर गायत्री परिवार के युवाओं की सक्रियता को सराहा। उन्होंने कहा कि अनुशासित और स्वावलम्बी युवा ही भावी समृद्ध भारत की आधारशिला रखेंगे। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि युवाओं को अपनी शक्तियों का बोध होना चाहिए। यदि वह शासन और समाज से अपेक्षाओं की जगह ईश्वर प्रदत्त सामर्थ्य का सदुपयोग करने लगे तो पूरे देश की दिशा और दशा बदल सकता है।

> “अनुशासित और स्वावलम्बी युवा होंगे समृद्ध भारत का आधार। - डॉ. चिन्मय जी

इस कार्यक्रम में सर्वश्री राज खन्ना, नगरपालिका अध्यक्ष बबिता जायसवाल, धर्मपाल सिंह, कैलाश नारायण तिवारी, गुड्डू सिंह, प्रभाकर सक्सेना, सरजू प्रसाद वानप्रस्थी, सोनू सिंह , डॉ. पी के पाण्डेय, डॉ. ए के सिंह, अलोक आर्य, डॉ. रमेश ओझा, डॉ. कुलदीप आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह ने सभी के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

इससे पूर्व सुल्तानपुर पहुँचने पर डॉ. पण्ड्या जी का भव्य स्वागत हुआ। गोमती हॉस्पिटल पर प्रथम स्वागतोपरांत वे गायत्री शक्तिपीठ पहुँचे। पूरे मार्ग में हजारों कार्यकर्त्ताओं ने उन पर पुष्पवर्षा कर युवा युगनायक का भव्य स्वागत किया।

अमेठी की गायत्री शक्तिपीठ में ‘प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा’ के नए स्वरूप का लोकार्पण

आदरणीय डॉ चिन्मय जी अमेठी की जनसभा को सम्बोधित करते हुए

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का अमेठी और उससे पूर्व ब्लॉक मुख्यालय भेटुआ पहुँचने पर भव्य स्वागत हुआ। अनेक गणमान्यों सहित गायत्री परिवार के प्रमुख कार्यकर्त्ता डॉ. त्रिवेणी सिंह, डॉ. प्रवीण सिंह दीपक, पं. जगदंबा प्रसाद त्रिपाठी मनीषी, डॉ. अक्षयबरनाथ तिवारी, डॉ. अर्जुन पाण्डेय आदि ने डॉ. चिन्मय जी को आधुनिक विवेकानन्द की उपाधि देते हुए पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया।

अमेठी। उत्तर प्रदेश
वर्तमान को सुधारना और भावी पीढ़ियों के लिए अच्छी दुनिया छोड़कर जाना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। हमें इसके लिए सतत प्रयास और श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए। गायत्री परिवार समाज को मानवोचित संभावनाएँ जगाने के लिए प्रेरित करता रहा है।

गायत्री शक्तिपीठ अमेठी में आयोजित परिवार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने यह सत्प्रेरणा दी। उन्होंने समाज की वर्तमान दयनीय स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि इसी के लिए इतना दुर्लभ मानव जीवन मिला है, जिसकी महिमा हमारे सद्ग्रंथ और ऋषि-मनीषी सुनाते नहीं थकते। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि मनुष्य में कला, साहित्य, धर्म, विज्ञान, अध्यात्म आदि विशिष्ट गुणों को विकसित करने की क्षमता है। जीवन में कौन-सी भावना साकार हो, यह व्यक्ति पर ही निर्भर है।

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश
दिनांक 7 मई को ही डॉ. चिन्मय जी प्रतापगढ़ पहुँचे और वहाँ के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया। उन्होंने सभी कार्यकर्त्ताओं से विचार क्रांति अभियान में जुट कर परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य एवं सप्त आन्दोलनों के माध्यम से युगशक्ति गायत्री रूपी युग संजीवनी को घर-घर पहुँचाने का अनुरोध किया।

हरिद्वार जिले का पारिवारिक परिचय सम्मेलन

रुड़की, हरिद्वार। उत्तराखण्ड
गुरुधाम से पधारे ओजस्वी, तेजस्वी साधक, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के मुख्य आतिथ्य में रुड़की में हरिद्वार जिले का पारिवारिक सम्मेलन आयोजित हुआ। मिशन के लिए समर्पित परिवारों का परस्पर परिचय हो, मिशन का परिचय पाकर नई पीढ़ी को अपने अभिभावकों की सक्रियता का गौरव बोध हो, यह पारिवारिक सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य था। इस सम्मेलन में जन्म शताब्दी वर्ष-2026 तक उत्तराखण्ड के घर-घर पहुँचने के अभियान पर चर्चा हुई, योजना बनी और समयदान के संकल्प उभरे।

आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी रुड़की में आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि मानव जीवन मिलना और फिर सद्गुरु की प्राप्ति जन्म-जन्मान्तरों के प्रबल पुण्यकर्मों से ही संभव है। हम सबको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है, इसे भौतिकता की चकाचौंध और समय के प्रवाह में नष्ट कर देने की बजाय, ईश्वरीय आकांक्षा को समझने में ही भलाई है। सद्गुरु की कृपा से ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है। सेवा, समर्पण की हर कसौटी पर खरे उतरकर ईश्वरीय योजना के साझेदार बनने में ही हमारी समझदारी है।

पश्चिमोत्तर जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री गौरी शंकर सैनी ने भी कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन किया। पारिवारिक सम्मेलन में रुड़की, बीएचईएल, बहादराबाद, लक्सर, खेड़ा, भगवानपुर, खानपुर, कुऑखेड़ा, नारसन, झबरेड़ा, फलोदा शाखाओं से जुड़े गायत्री परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

विश्व प्रसिद्ध तीर्थ अयोध्या की विशिष्ट गरिमा के अनुरूप दिव्य और भव्य बनेगा गायत्री शक्तिपीठ

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने नवनिर्माण कार्यों के लिए शिलापूजन किया

रामकथा पार्क में दीपयज्ञ के अवसर पर उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

अयोध्या। उत्तर प्रदेश
भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में रामकोट स्थित गायत्री शक्तिपीठ का विश्व प्रसिद्ध तीर्थ की गरिमा के अनुरूप ही विस्तार हो रहा है। दिनांक 6 मई 2022 को अयोध्या पहुँचे देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने शक्तिपीठ के विस्तार के लिए भूमिपूजन एवं शिलापूजन किया।

सायंकाल सरयू तट पर स्थित रामकथा पार्क में विशाल दीपयज्ञ का आयोजन हुआ। 11000 प्रज्वलित दीपों के दिव्य प्रकाश ने उपस्थित हजारों कार्यकर्त्ताओं को भी आलोकित कर दिया। डॉ. चिन्मय जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि श्रीराम जन्मभूमि में भव्य शक्तिपीठ का निर्माण सौभाग्य की बात है। जहाँ भगवान राम से हमें मर्यादा और श्री हनुमान से भक्ति की प्रेरणा मिलती है, वहीं गायत्री के ज्ञान का आलोक भूली-भटकी मानवता को सन्मार्ग पर चलाता है।

दीपयज्ञ में उपस्थित विशिष्ट गणमान्य रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव श्री चंपतराय ने कहा कि गायत्री महाशक्ति है, इसके नियमित जप से मनुष्य की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। रामवल्लभाकुंज के अधिकारी श्री राजकुमारदास ने भी गायत्री की महिमा बताई। इस अवसर पर भाजपा के प्रदेश महामंत्री श्री अमरपाल मौर्य भी मंच पर उपस्थित थे।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने रामलला और हनुमानगढ़ी में जाकर हनुमंतलाल का दर्शन-पूजन भी किया।

शक्तिपीठ के पाँच मंजिला भवन के लिए शिलान्यास

शक्तिपीठ प्रवक्ता श्री महेन्द्र सिंह ने बताया कि अयोध्या में गायत्री शक्तिपीठ को करोड़ों रुपयों की लागत से भव्य और सुन्दर बनाया जा रहा है। नवनिर्मित पाँच मंजिला भवन में कार पार्किंग, सत्संग हॉल, भोजनालय सहित लगभग 1000 लोगों के ठहरने की व्यवस्था होगी।

स्वजनों की स्मृति में वाङ्मय स्थापना

गायत्री ज्ञान मंदिर, लखनऊ ने शिक्षण संस्थानों में कराई स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश
गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर द्वारा माँ चन्द्रिका देवी पैरा मेडिकल इंस्टीट्यिट, भवली बी.के.टी. लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में परम पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय के सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापना की गई। उपरोक्त साहित्य गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट गायत्री मंदिर इन्दिरा नगर लखनऊ के सक्रिय कार्यकर्ता श्री बी.डी. सिंह (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.) ने अपने पूज्य माता-पिता स्व. श्रीमती रानी देवी, स्व. चन्द्रशेखर सिंह की स्मृति में भेंट किया है। इस अवसर पर उनकी पत्नी श्रीमती कंचन सिंह उपस्थित थीं।

श्री संदीप गुप्ता एवं डॉ. प्रीती गुप्ता ने अम्बिकेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेस बी.के.टी. लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में युगऋषि के वाङ्मय के समस्त 79 खण्डों की स्थापना कराई। इस अवसर पर संस्थान के चेयरमैन श्री आर.पी. पाण्डेय, निदेशिका फार्मा श्रीमती सविता उपाध्याय, प्रबन्धक प्रशासन श्री जितेन्द्र मिश्रा सहित कई गणमान्य, शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। सभी को युग साहित्य प्रदान किया गया।

रामेश्वरम कालेज ऑफ एजुकेशन एण्ड ट्रेनिंग, कसीदा शंकरगढ़ प्रयागराज के केन्द्रीय पुस्तकालय में विचार क्रान्ति अभियान के अन्तर्गत 362वीं वाङ्मय स्थापना हुई। रामेश्वर ग्रुप के प्रधान कार्यालय, लखनऊ में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह साहित्य गायत्री ज्ञान मंदिर के सक्रिय कार्यकर्ता श्री एम.सी. निगम एवं श्रीमती नोवल निगम ने अपने माता-पिता स्व. राम प्रसाद निगम एवं स्व. रानी निगम एवं पूज्य सास-ससुर स्व. राम निगम एवं स्व. श्रीमती इन्दिरा निगम की स्मृति में दान किया है।

तीनों शिक्षण संस्थानों में विचार क्रान्ति अभियान संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने वाङ्मय के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उपस्थित सभी गणमान्यों, शिक्षक-विद्यार्थियों को अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाएँ, मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ व युग साहित्य भेंट किए गए।

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर लखनऊ द्वारा अब तक लखनऊ और आसपास के 362 पुस्तकालयों में वाङ्मय सेट स्थापि किए गए हैं।

अम्बिकेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्माक्यूटिकल साइंसेस में समारोह को सम्बोधित करते श्री उमानंद शर्मा

युवा चेतना जागरण के लिए अनेक प्रान्तों में चल रही शिविरों की श्रृंखला

छत्तीसगढ़ के 17 जिलों में चल रही है व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर श्रृंखला

बरमकेला शिविर के प्रतिभागी विद्यार्थी अपने प्रशिक्षण और प्रमाणपत्रों के साथ

बालोद के विद्यार्थियों द्वारा निकाली गई रैली

सैकड़ों गाँवों के किशोर-विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया

गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर नशा और मांसाहार त्याग रहे हैं युवा

सुकमा। छत्तीसगढ़
गायत्री परिवार द्वारा सुकमा में 10 से 14 मई की तिथियों में व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर आयोजित किया गया। इसमें 40 गाँवों से आए 280 विद्यार्थियों ने भाग लिया। पाँच दिनों में बच्चों को सफल जीवन की दिशाधारा, व्यक्तित्व निर्माण के सूत्र, व्यावसायिक मार्गदर्शन सहित आध्यात्मिक जीवन एवं सामाजिक उत्थान से सम्बन्धित अनेक विषयों की जानकारी दी गई।

यह शिविर प्रदेश के 17 जिलों में आयोजित हो रहे व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविरों की शृंखला में से एक था, जिसका संचालन करने सर्वश्री चम्पेश्वर साहू, लेखराम साहू, डॉ. गोपाल साहू, वरुण कुमार साहू, सुश्री चंद्रकला साहू, सुश्री अनिता साहू की टोली पहुँची थी। सुकमा जिले के कार्यकर्ता आयता राम पोडियाम, बुधराम बघेल, रामसिंह नाग, उर्मिला नाग, घासीराम यादव आदि अनेक युवाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

बरमकेला, रायगढ़। छत्तीसगढ़
15 से 19 मई की तिथियों में बरमकेला में 5 दिवसीय व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें 12 युवा मंडलों का गठन किया गया। 11 बाल संस्कार शालाएँ आरम्भ करने के संकल्प उभरे। 100 से अधिक भाई-बहिनों ने वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, स्कूल-कॉलेजों में व्यसन मुक्ति के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के संकल्प लिये। 21 युवाओं ने अध्यात्म की दिशा में एक कदम बढ़ाते हुए मांसाहार का त्याग किया। इस शिविर को रोमा साहू, अनिमा सिंह, योगेश साहू, राजेश देवांगन की टोली ने सम्पन्न कराया।

बालोद। छत्तीसगढ़
गायत्री शक्तिपीठ बालोद के बैनर तले गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यापीठ बालोद में दिनांक 20 मई से 24 मई तक आयोजित व्यक्तित्व निर्माण युवा जागरण शिविर में बालोद ब्लॉक के 23 गाँव से आए 160 युवक-युवतियों ने भाग लिया। डॉ. कुंती साहू के कुशल नेतृत्व में यह शिविर सम्पन्न हुआ। प्रायोगिक तौर पर नगर में व्यसन मुक्ति रैली निकाली गई, जिसने चौक-चौराहों से गुजरते हुए नवजागरण संदेश दिया। सप्त आंदोलन, तनाव प्रबंधन, बाल संस्कार शाला जैसे रचनात्मक सक्रियता वाले कार्यक्रमों ने सभी को बहुत उत्साहित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम ज्ञानवर्धन के साथ परस्पर आत्मीयता संवर्धन का माध्यम बने। अनेक युवाओं ने दीक्षा एवं शिखा स्थापन कराए। सभी को प्रमाण पत्र एवं मिशन की पत्रिकाएँ एवं युग साहित्य प्रदान कर विदाई दी गई।

चोलनार, दन्तेवाड़ा। छत्तीसगढ़
गायत्री आश्रम चोलनार (बैलाडीला) में सम्पन्न 5 दिवसीय आवासीय व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर में 26 दीक्षा संस्कार, 12 यज्ञोपवीत संस्कार हुए। 17 लोगों ने मांसाहार तथा 8 ने नशा त्यागने का संकल्प लिया।

भैरोपुर, बलरामपुर। छत्तीसगढ़
ग्राम भैरोपुर, ब्लॉक शंकरगढ़ में जीवन साधना का व्यवहारिक प्रशिक्षण बड़े रोचक ढंग से दिया गया। सर्वाधिक ध्यान आज की युवा पीढ़ी को भटकाने और रोग ग्रस्त करने वाली व्यसन रूपी कुसंगति से बच्चों को दूर रखने पर था। 20 मई 2022 को शंकरगढ़ में व्यसन मुक्ति रैली भी निकाली गई।

इस शिविर में 55 किशोर और 13 बच्चों ने प्रशिक्षण लिया। उनमें मांसाहार व नशा त्यागने का जबरदस्त उत्साह उभरा। अनेक बच्चों ने दीक्षा और यज्ञोपवीत संस्कार कराए। शिविर संचालन सुश्री रुक्मणी बंछोर की बहिनों की टोली ने किया।

ओडिशा के हर जिल में चल रही है एक दिवसीय युवा शिविरों की श्रृंखला

इन दिनों ओडिशा में एक दिवसीय जिला स्तरीय युवा शिविरों की शृंखला आयोजित कर युवाओं को राष्ट्र निर्माण के सृजनात्मक कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा रहा है। इन सम्मेलनों के सत्परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं। ऑनलाइन जुड़े युवा प्रकोष्ठ शान्तिकुञ्ज के प्रभारी श्री के.पी. दुबे तथा ओडिशा जोन समन्वयकों ने भी इन्हें सम्बोधित किया। उन्होंने साधना से आत्मशोधन, आत्म विकास और अर्जित शक्तियों का सदुपयोग राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में लगाने के लिए प्रेरित किया।

14 मई के दिन भादरा जिले का शिविर शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग 75 युवाओं ने भाग लिया। स्त्री रोग विशेषज्ञ सत्यभामा दास ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इसका संचालन श्री दुर्गा रे, श्री प्रकाश दास, श्री संतोष कुमार जेना, श्री सत्यजीत ने किया। सुश्री कुमुदिनी के अनुसार इस शिविर में सबके सहयोग से 5 बाल संस्कार शाला चलाने, 2000 वृक्षों की पौध लगाने, 4000 लोगों से मन्त्रलेखन कराने और 400 घरों में यज्ञ कराने के संकल्प लिए गए।

15 मई को केन्द्रपाड़ा जिले में आयोजित शिविर में लगभग 85 युवाओं ने भाग लिया। तुलसी महिला महाविद्यालय की प्राचार्या ने इसका शुभारम्भ किया।

15 मई को ही जगतसिंहपुर ब्लॉक के बलिया पंचायत के कुजंगा ब्लॉक में युवा चेतना शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग 80 युवाओं ने भाग लिया है। इसका संचालन सुश्री निबेदिता और साथियों ने किया। उपरोक्त दोनों शिविरों में भी बाल संस्कार शाला चलाने, वृक्षों की पौध लगाने तथा विविध रचनात्मक गतिविधियों में भागीदारी के शानदार संकल्प उभरे।

कंधमाल जिले के बालीगुड़ा में 23 मई को शिविर सम्पन्न हुआ। जिले के प्रायः सभी ब्लॉक के लगभग 100 युवाओं ने भाग लिया। अधिकांश प्रतिभागी आदिवासी क्षेत्र के थे, जो मिशन के रचनात्मक आन्दोलनों को गति देने के लिए बहुत उत्साहित हुए। श्री अनन्त चरण पृस्ती, कबिराज साहू और अन्तर्यामी बेहरा शिविर के प्रमुख आयोजक थे।

कंधमाल जिले के बालीगुड़ा में आयोजित शिविर में भाग लेते युवक-युवतियाँ

जयपुर उपजोन की गर्भोत्सव संस्कार प्रशिक्षण कार्यशाला

जयपुर। राजस्थान
'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान को गति देने के लिए उपजोन स्तर पर संगठन सशक्तीकरण के लक्ष्य के साथ 8 मई को गायत्री वेदना निवारण केन्द्र जयपुर में गर्भोत्सव संस्कार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। ग्रेटर जयपुर, ग्रेटर जयपुर हैरिटेज, जयपुर ग्रामीण, सीकर, टोंक, दौसा जिलों के लगभग 650 कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों ने इसका लाभ लिया। उत्तर प्रदेश की आन्दोलन प्रभारी डॉ. संगीता सारस्वत, भरतपुर उपजोन प्रभारी डॉ. सरोज गुप्ता तथा शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्रीमती शालिनी वैष्णव इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता थीं।

शिविर का शुभारम्भ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री राजकुमार वैष्णव द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। उन्होंने अपने वक्तव्य में परम पूज्य गुरुदेव के जीवन के हृदयस्पर्शी प्रसंग बताते हुए गुरुसत्ता के साथ सघन आत्मीयता का वातावरण विनिर्मित किया। उन्होंने परम वंदनीया माताजी एवं अखण्ड ज्योति के जन्मशताब्दी वर्ष-2026 से जुड़े दायित्वों का स्मरण कराया।

संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण, गर्भ विज्ञान और आहार-विहार आदि प्रशिक्षण के मुख्य विषय रहे। राजस्थान जोन के सहायक समन्वयक डॉ. प्रशांत भारद्वाज ने अभियान को गति देने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर संगठन बनाने और दायित्व सँभालने की प्रेरणा दी।

भोजनावकाश के बाद श्रीमती शालिनी वैष्णव ने शिविर में उपस्थित गर्भवती बहनों का गर्भोत्सव संस्कार कराया। क्षेत्रीय संगठनों के निर्माण की प्रक्रिया चली। जोन प्रभारी श्री ओमप्रकाश अग्रवाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ शिविर का समापन हुआ।

जयपुर की कार्यशाला में उपस्थित बहिनों का सम्मान और उपजोन की प्रतिभागी बहिनें

स्त्री रोग विशेषज्ञ चिकित्सकों का सम्मेलन

कई अन्य प्रतिष्ठित कार्यक्रम भी हुए

- अलंकार कॉलेज, सिरसी रोड, जयपुर में 1000 विद्यार्थियों को गर्भोत्सव संस्कार के ज्ञान-विज्ञान की जानकारी दी गई। डॉ. संगीता सारस्वत, डॉ. सरोज गुप्ता तथा शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्रीमती शालिनी वैष्णव ने उन्हें सम्बोधित किया।
- गवर्नमेण्ट कॉलेज ऑफ नर्सिंग में गर्भ संस्कार से सम्बन्धित कार्यक्रम हुआ, जिसे डॉ. सरोज गुप्ता ने सम्बोधित किया।
- डॉ. संगीता सारस्वत ने 50 स्त्री रोग विशेषज्ञों की एक सेमीनार को सम्बोधित करते हुए भावी पीढ़ी के नवनिर्माण के इस आन्दोलन की रूपरेखा बड़ी कुशलता के साथ समझाई।
- कन्सेप्ट कोचिंग सेंटर में भी गर्भोत्सव संस्कार पर एक कार्यक्रम आयोजित हुआ।

8 जिलों में सम्पन्न हुए युवा चेतना शिविर

झारखण्ड के हर जिले में आयोजित होंगे

जमशेदपुर। टाटानगर
गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ झारखंड के द्वारा हर जिले में चरणबद्ध युवा चेतना शिविरों का आयोजन हो रहा है। समाचार प्राप्त होने तक प्रथम चरण में आठ जिले-रामगढ़, हजारीबाग, पश्चिम सिंहभूम का चाईबासा, गोड्डा, बोकारो, कोडरमा, साहेबगंज और धनबाद में एक दिवसीय युवा चेतना शिविर सफलतापूर्वक आयोजित हो चुके थे। इन शिविरों की सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि प्रत्येक जिले के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं का प्रशंसनीय सहयोग रहा। उन्होंने युगऋषि के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने ही घर-परिवार के पुत्र, पुत्री, बहू, दामाद, भाई-भतीजे तथा अपने पड़ोस के युवाओं को व्यक्तित्व परिष्कार और मिशन की गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता के लिए सहमत करने का आश्वासन दिया।

सभी शिविर एक दिवसीय थे। युवा प्रकोष्ठ द्वारा प्रान्तीय स्तर पर संचालित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, बाल संस्कारशाला, किशोर संस्कारशाला, 25 सितंबर को आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय रक्तदान शिविर, प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर एवं नशा मुक्ति अभियान जैसे कार्यक्रमों के प्रगति प्रतिवेदन के साथ उन्हें गति देने हेतु प्रमुख आवश्यकताओं पर चर्चा हुई।

अगले चरण में प्रदेश के शेष 16 जिलों में मई और जून में जिला स्तरीय शिविर निर्धारित थे। तत्पश्चात् ब्लॉक स्तर पर भी ऐसे शिविर आयोजित करने की घोषणा की गई।

कार्यशाला : आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

भोपाल। मध्य प्रदेश : आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के अन्तर्गत गायत्री शक्तिपीठ भोपाल पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें भोपाल उपजोन के भोपाल, रायसेन, विदिशा, सीहोर, नर्मदापुरम तथा हरदा जिलों के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। भोपाल के 200 और अन्य जिलों के 50 कार्यकर्त्ता इसमें उपस्थित थे।

कार्यशाला का शुभारंभ भोपाल की प्रख्यात महिला चिकित्सक डॉ. गायत्री श्रीवास्तव एवं डॉ. वरुणा पाठक ने दीप प्रज्वलन कर किया। सुश्री लेखा चौहान, रमा देशमुख, अंजना परिहार, दीप्ति भारद्वाज, राजश्री चोरिया, श्रीमती संध्या नेमा तथा श्रीमती संध्या जैन ने गर्भस्थ शिशु के समग्र विकास के लिए आवश्यक विविध विषयों की जानकारियाँ विस्तार से प्रदान कीं। तपोभूमि, मथुरा से पधारे श्री ईश्वर शरण पाण्डेय तथा भोपाल शक्तिपीठ के व्यवस्थापक श्री रामचंद्र गायकवाड़ का विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की रूपरेखा श्रीमती मधु श्रीवास्तव ने प्रस्तुत की।

पति के लिए चरित्र, सन्तान के लिए ममता, समाज के लिए शील और जीवमात्र के लिए करुणा सँजोने वाली महाकृति नारी है। – महर्षि रमण

नारी सशक्तीकरण और युवा चेतना जागरण के लिए हुआ एक प्रभावशाली आयोजन

साधना से उपार्जित श्रद्धा, संवेदना, सेवा, सहिष्णुता, वात्सल्य जैसे सद्गुण ही नारी के सच्चे आभूषण हैं।

- आद. शेफाली दीदी

आदरणीया शेफाली दीदी महिला जागृति सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

वडोदरा। गुजरात

इस वर्ष की देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञों की शृंखला में 3 से 6 मई की तिथियों में वडोदरा के झाँसी की रानी मैदान, सुभानपुरा में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। 4 मई की सायंकाल आयोजित महिला सम्मेलन इस महायज्ञ का मुख्य आकर्षण था। शान्तिकुञ्ज से पधारीं आदरणीया श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी इसकी मुख्य वक्ता थीं।

श्रीमती शेफाली जी ने वडोदरा की बहिनों के युग निर्माणी उत्साह का अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि साधना से उपार्जित श्रद्धा, संवेदना, सेवा, सहिष्णुता, वात्सल्य जैसे सद्गुण ही नारी के सच्चे आभूषण हैं। आज के अशान्त और अभावग्रस्त समाज को इन्हीं दिव्य गुणों की प्रमुख रूप से आवश्यकता है। आज के भौतिकवादी युग में नारी ने प्रगति के कई मार्ग अपनाए हैं, लेकिन घर-परिवार को स्वर्ग बनाने वाली, समाज को ऊँचा उठाने वाली सच्ची प्रगति वही है, जो सीता-सावित्री, कस्तूरबा के जीवनमूल्यों का अनुसरण करते हुए की जाय।

शेफाली दीदी ने परम वंदनीया माताजी के हृदयस्पर्शी जीवन प्रसंग सुनाए। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार इस वर्ष को नारी सशक्तीकरण वर्ष के रूप में मना रहा है। इस वर्ष हमें योजनाबद्ध सक्रियता के साथ उनके जीवन आदर्शों को घर-घर पहुँचाना है।

मस्तक पर सद्ग्रंथ धारण किए बहिनों की विशाल शोभायात्रा के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। युवा सम्मेलन और दीपयज्ञ ने लोगों में श्रद्धा-सक्रियता के शानदार संकल्प उभारे।

कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री परमानंद द्विवेदी की टोली ने किया। सांसद सुश्री रंजना बेन भट्ट के अलावा अनेक प्रतिष्ठित गणमान्यों और जनप्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। गर्भ संस्कार के सामूहिक आयोजनों को प्रोत्साहित करने में सफलता मिली, सैकड़ों गर्भवती बहिनों के संस्कार हुए। दीक्षा एवं अन्य संस्कार भी सैकड़ों की संख्या में हुए।

इस कार्यक्रम में नगर में 112 नए स्वाध्याय केन्द्र और बाल संस्कार केन्द्र आरंभ करने के संकल्प उभरे हैं। समय की माँग के अनुरूप विचार क्रान्ति के लिए 2400 सद्ग्रंथ स्थापना के सामूहिक संकल्प भी लिए गए।

कार्यक्रम में आयुर्वेदिक एवं ऐलोपैथिक चिकित्सा शिविर लगाए गए, जिनका 200 से अधिक लोगों ने लाभ लिया। 28 यूनिट रक्तदान हुआ। 32 लोगों ने देहदान के संकल्प पत्र भरे।

बच्चों का विद्यारम्भ संस्कार कराती शान्तिकुञ्ज की टोली

प्रवेश प्रारंभ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रत्यायित एवं आईएसओ 9001 : 2015 एवं 45001 : 2018 द्वारा प्रमाणित

ऑनलाइन आवेदन : www.dsvv.ac.in @dsvvofficial

परीक्षा केन्द्र भोपाल (म.प्र) हरिद्वार (उत्तराखण्ड) कोलकाता (प.बंगाल) लखनऊ (उ.प्र) नोएडा (उ.प्र.) नागपुर (महाराष्ट्र) पटना (बिहार) राजनांदगाँव (छ.ग.)

स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम 3 वर्ष

बी.एससी.	गणित (ऑनर्स)
बी.एससी.	योग विज्ञान (ऑनर्स)
बी.एससी.	इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी
बी.वोक.	3डी एनीमेशन एण्ड वीएफएक्स
बी.सी.ए.	बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन
बी.ए.	संस्कृत (ऑनर्स)
बी.ए.	हिन्दी (ऑनर्स)
बी.ए.	अंग्रेजी (ऑनर्स)
बी.ए.	इतिहास (ऑनर्स)
बी.ए.	मनोविज्ञान (ऑनर्स)
बी.ए.	संगीत (ऑनर्स)
बी.बी.ए.	टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेण्ट
बी.आर.एस.	बैचलर ऑफ रूरल स्टडीज

स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम 4 वर्ष

बी.ए.	पत्रकारिता एवं जनसंचार

डिप्लोमा पाठ्यक्रम 1 वर्ष

- पी.जी. डिप्लोमा-मानव चेतना, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा (केवल विदेशी छात्रों हेतु)
- पी.जी. डिप्लोमा-धर्म विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक
- पी.जी. डिप्लोमा-गाइडेन्स एण्ड कॉउंसलिंग
- डिप्लोमा- मीडिया ग्राफिक्स एण्ड वीडियो एडिटिंग

प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम 6 माह

- धर्म विज्ञान
- योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा
- समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम 2 वर्ष

एम.ए./एम.एससी.	नैदानिक मनोविज्ञान
एम.ए./एम.एससी.	मानव चेतना एवं योग विज्ञान
एम.ए./एम.एससी.	योग विज्ञान एवं आयुर्वेद
एम.ए./एम.एससी.	योग विज्ञान एवं वैकल्पिक चिकित्सा
एम.एससी.	योग चिकित्सा
एम.एससी.	एप्लाइड मेडिसिनल एवं एरोमेटिक प्लाण्ट साइंसेज
एम.सी.ए.	मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन
एम.बी.ए.	टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेण्ट
एम.ए.	शिक्षा
एम.ए.	पत्रकारिता एवं जनसंचार
एम.ए.	इतिहास एवं भारतीय संस्कृति
एम.ए.	संस्कृत
एम.ए.	हिन्दी
एम.ए.	संगीत-गायन
एम.ए.	संगीत-तबला, पखावज
एम.ए.	दर्शनशास्त्र
एम.ए.	हिन्दू अध्ययन

आवेदन फॉर्म हेतु

• ऑनलाइन आवेदन-http://www.dsvv.ac.in (₹ 1000/-)
• ऑफलाइन आवेदन-**वेबसाइट से आवेदन पत्रक** डाउनलोड करें एवं भरकर डाक द्वारा भेजें (₹ 1000/-) अथवा डाक से DD के द्वारा मंगवाएँ। ड्राफ्ट **देव संस्कृति विश्वविद्यालय** के नाम हरिद्वार में देय होगा। • प्रत्येक आवेदक एक ही पाठ्यक्रम के लिए आवेदन कर सकता है। • प्रवेश प्रक्रिया एवं अन्य विस्तृत जानकारियाँ विश्वविद्यालय की विवरणिका एवं वेबसाइट पर उपलब्ध है।

कुलसचिव : **देव संस्कृति विश्वविद्यालय,** गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411 (उत्तराखण्ड)
फोन : (01334) 261367 (Ext.: 5407, 5524 **वेब** : www.dsvv.ac.in
ईमेल : admissions@dsvv.ac.in **मोबाइल** : +91-9258360763, 9258369612, 9720107192

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 की तैयारियों के तीन महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम

गंगाजल-देवस्थापना

आज समाज की शुष्क संवेदनाओं को जाग्रत् करने की सबसे बड़ी आवश्यकता है। गत वर्ष शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती और हरिद्वार कुम्भ के समय से आरम्भ किया गया देवस्थापना, गंगाजली स्थापना और मिशन की परिचयात्मक पुस्तिका को घर-घर स्थापित करने का अभियान बहुत ही लोकप्रिय और प्रभावी सिद्ध हुआ है। इसे निरंतर गति देने की आवश्यकता है।

- गुरुपूर्णिमा, श्रावणी जैसे महत्त्वपूर्ण पर्वों पर विशेष अभियान चलाकर स्थापना कराएँ।
- प्रत्येक संस्कार कराने वालों के घर इनका महत्त्व समझाते हुए अनिवार्य रूप से देवस्थापना की जाएँ।
- गृहे-गृहे यज्ञ अभियान एवं सार्वजनिक यज्ञों के साथ इस क्रम को अनिवार्य रूप से जोड़ा जाए।

डाक टिकट स्मारक

अपने मिशन के लिए भारत सरकार द्वारा शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष में डाक टिकट जारी करना एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। इसे स्मृति स्वरूप सहेजकर रखें, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ मिशन में आपकी भागीदारी का स्मरण कर गौरवान्वित हो सकें।

- डाक टिकट के साथ निर्मित स्मारकों को घर, दुकान, दफ्तर, सार्वजनिक स्थानों पर लगाएँ, लगवायें। जो इन्हें देखेंगे, मिशन के प्रति उनकी जिज्ञासा बढ़ेगी।

सद्ग्रंथ स्थापना

दुनिया में सुख-शान्ति की, सतयुगी परिस्थितियों की, रामराज्य की स्थापना शाश्वत संस्कृति के सनातन सूत्रों को अपनाने पर ही संभव हो सकेगी। युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव के विचार आज की परिस्थितियों में उन सनातन सूत्रों की सटीक, व्यावहारिक, वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित सर्वमान्य व्याख्या है। समाज का हर वर्ग बड़ी सहजता से इन्हें स्वीकारता और सम्मान करता है। इन विचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना आज का युगधर्म है।

- सद्ग्रंथ स्थापना अभियान को युग निर्माण योजना का एक प्रमुख साधन माना जाना चाहिए। प्रत्येक कार्यक्रम में, व्यक्तिगत संपर्क से हरेक धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक संस्थानों में इनकी स्थापना करने का प्रभावशाली अभियान चलाया जाए।
- केवल स्थापना ही न हो, लोगों में उनके स्वाध्याय की रुचि बढ़ती रहे, ऐसे प्रयास होने चाहिए। प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल, स्वाध्याय मण्डलों में इन पर चर्चा का नियमित क्रम रहे। शक्तिपीठों में कम से कम साप्ताहिक सत्संग की व्यवस्था हो।
- युग साहित्य पर आधारित प्रतियोगिताएँ जिज्ञासाएँ उभारती हैं, विचार-संस्कार बदलती हैं।

"मेरे विचार क्रान्ति के बीज हैं। दुनिया को पलट देने का जो दावा हम करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं। आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए।"

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हुए शान्तिकुञ्ज के नैष्ठिक जीवनदानी कार्यकर्त्ता

श्री त्रिलोकीनाथ सौंधी

अपनी विनम्रता और सेवाभावना से शान्तिकुञ्ज में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके श्री त्रिलोकीनाथ सौंधी 24 वर्षों तक अपने गुरुधाम में सेवाएँ प्रदान करने के बाद 27 मई 2022 को गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। उन्होंने अपने गृह नगर लखनऊ में जीवन की अंतिम साँस ली।

स्व. श्री सौंधी जी ने यहाँ प्रमुख रूप से निर्माण विभाग का हिसाब-किताब सँभाला। उन्होंने सन् 2011 में हरिद्वार में सम्पन्न सृजन संकल्प विभूति महायज्ञ में अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान की थीं। देहावसान के तीन महीने पहले तक वे शान्तिकुञ्ज में ही सेवाएँ प्रदान कर रहे थे।

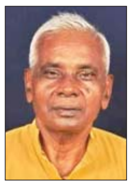

श्री जुगल किशोर प्रसाद

पिछले 19 वर्षों से देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार को अपने स्नेह और सद्भाव से सींच रहे एक युवा हृदय 79 वर्षीय कार्यकर्त्ता श्री जुगल किशोर प्रसाद दिनांक 28 मई 2022 को स्थूल काया त्यागकर परम चेतना में विलीन हो गए। गुरुदेव-माताजी को सदैव अपने अंतःकरण में प्रतिष्ठित रखने वाले वे एक आदर्श स्वयंसेवक थे। बच्चे, बूढ़े, अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी सभी उनका प्रेम और सहयोग पाकर अभिभूत थे। विवि. परिवार ने सदैव उन्हें एक अभिभावक जैसा सम्मान दिया।

श्री जुगल किशोर प्रसाद जी जमालपुर, बिहार के मूल निवासी थे। वे सन् 1978 से ही मिशन से जुड़े, दीक्षा ली। सन् 1982 से हर वर्ष तीन माह का समयदान कर केन्द्रीय टोलियों में जाते रहे। अश्वमेध यज्ञों के भोजनालय में बड़ी जिम्मेदारियाँ सँभालीं। सन् 2003 में देव संस्कृति विश्वविद्यालय आने के बाद कई विभागों में सेवाएँ प्रदान कीं। स्व. श्री जुगल किशोर जी अपने पीछे चार पुत्रों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

बाल संस्कार शाला के बच्चों की प्रभावशाली प्रस्तुति

वैशाली, गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश : बुद्ध पूर्णिमा के दिन वैशाली स्थित रामप्रस्थ ग्रीन की पर्ल कोर्ट सोसाइटी में बाल संस्कारशाला के बच्चों ने विधि-विधान से यज्ञ कराया। उन्होंने परिपक्व पुरोहित की तरह यज्ञ का दर्शन और मंत्रों का अर्थ भी समझाया। उनके द्वारा संचालित यज्ञ में उनके अभिभावक-परिजन सहित सोसाइटी के बड़े-बुजुर्गों ने भाग लेते हुए वैश्विक सुख-शान्ति, पर्यावरण की शुद्धि और सबके उत्तम स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएँ कीं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.6.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23